



॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

अप्रैल 2018 वर्ष 21, अंक 4

विक्रमी सम्वत् 2075

एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110

दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

कुल पृष्ठ 20

यज्ञ-महिमा

□ पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री

‘यज्ञ’ शब्द यज् धातु से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है-देवपूजा, संगतिकरण और दान। संसार के सभी श्रेष्ठकर्म यज्ञ कहे जाते हैं। यज्ञ को अग्निहोत्र, देवयज्ञ, होम, हवन, अध्वर भी कहते हैं।

यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं-

“सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

जहां होम होता है, वहां से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझलो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के, वायु के साथ दूर देश में जाकर, दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर, औषधियां शुद्ध होती हैं। शुद्ध वायु का श्वास स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ता है। इसको ‘देवयज्ञ’ भी कहते हैं क्योंकि यह वायु आदि पदार्थों को दिव्य कर देता है।

परोपकार की सर्वोत्तम विधि हमें यज्ञ से सीखनी चाहिए। जो हवन सामग्री की आहुति दी जाती है, उसकी सुगन्धित वायु द्वारा अनेक प्राणियों तक पहुंचती है। वे उसकी सुगन्ध से आनन्द अनुभव करते हैं। यज्ञकर्ता भी अपने सत्कर्म से सुख अनुभव करता है। सुगन्धित प्राप्त करने वाले व्यक्ति याज्ञिक को नहीं जानते और न ही याज्ञिक उन्हें जानता है। फिर भी परोपकार हो रहा है, वह भी निष्काम।

यज्ञ में चार प्रकार के हव्य पदार्थ डाले जाते हैं-

1. सुगन्धित-केशर, अगर, तगर, गुग्गल, कर्पूर, चन्दन, इलायची, लौंग, जायफल, जावित्री आदि।
2. पुष्टिकारक-घृत, दूध, फल, कन्द, मखाने, अन्न, चावल, जौ, गेहूं, उड़द आदि।
3. मिष्ट-शक्कर, शहद, छहारा, किसमिस, दाख आदि।
4. रोगनाशक-गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मुलहठी, सोंठ, तुलसी आदि औषधियां अर्थात् जड़ी बूटियां जो हवन-सामग्री में डाली जाती हैं।

यज्ञ से रोगाणुओं अर्थात्-कृमियों का नाश हो जाता है। ये रोगजनक कृमि पर्वतों, वनों, औषधियों, पशुओं और जलों में रहते हैं, जो हमारे शरीर में अन्न और जल के साथ जाते हैं।

मलमूत्र के विसर्जन, पदार्थों के गलने-सड़ने, श्वास-प्रश्वास की प्रक्रिया, धूम्रपान, कलका रखानों-वाहनों-भट्टों से निकलने वाला धुआं, संयंत्रों के प्रदूषित जल, रसायन तत्त्व एवं अपशिष्ट पदार्थों आदि से फैलने वाले प्रदूषण के लिए मानव स्वयं ही उत्तरदायी है। अतः उसका निवारण करना भी उसी का कर्तव्य है।

वस्तुतः पर्यावरण को शुद्ध बनाने का एकमात्र उपाय यज्ञ है। यज्ञ प्रकृति के निकट रहने का साधन है। रोग-नाशक औषधियों से यज्ञ द्वारा रोगनिवारण वातावरण को प्रदूषण से मुक्त करके स्वस्थ रहने में सहायक होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी परीक्षण करके यज्ञ द्वारा वायु की शुद्धि होकर रोगनिवारण की इस वैदिक मान्यता को स्वीकार किया है।

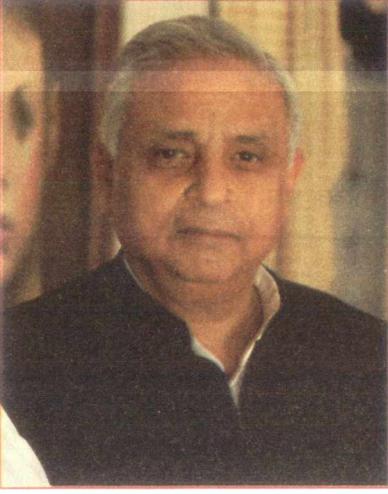
प्रायः लोगों का विचार है कि यज्ञ में डाले गए घृत आदि पदार्थ व्यर्थ ही चले जाते हैं। परन्तु उनका यह विचार ठीक नहीं है। विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु उसका रूप बदलता है। यथा-बर्फ पिघल कर जल रूप में बदलना, जल का वाष्प रूप में बदल कर उड़ जाना। रूप बदलने का अर्थ नष्ट होना नहीं, बल्कि अवस्था परिवर्तन है। बस, यही सिद्धान्त यज्ञ पर भी चरितार्थ होता है। यज्ञ में डाले गए पदार्थ सूक्ष्म होकर आकाश में पहुंच जाते हैं। यज्ञ में पौष्टिक, सुगन्धित और रोगनाशक औषधियों की हवन सामग्री से दी गई आहुतियों से पर्यावरण की शुद्धि होती है। सभी पदार्थ सूक्ष्म होकर पृथिवी, आकाश, अन्तरिक्ष में जाकर अपना प्रभाव दिखाते हैं। इससे मनुष्य, अन्य जीव-जन्तु एवं वनस्पतियां सभी प्रभावित होते हैं।

यज्ञ से शुद्ध हुई जलवायु से उत्पन्न औषधि, अन्न और वनस्पतियां आदि भी शुद्ध एवं निर्दोष होते हैं। वायु, जल आदि जो देव हैं, वे यज्ञ से शुद्ध हो जाते हैं, आकाश मण्डल निर्मल और प्रदूषण मुक्त हो जाता

(शेष पृष्ठ 18 पर)

‘टंकारा समाचार’ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे डी.ए.वी. डॉ. पूनम सूरी आज के महात्मा हंसराज



यद्यपि यह एक प्रसिद्ध उक्ति है कि 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि' फिर भी अभी हाल ही में डी.ए.वी. मुख्यमन्त्री पब्लिक स्कूल, छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने डी.ए.वी. को संचालन हेतु दिये हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के परीक्षण एवं स्थानीय बैठकों हेतु प्रवास के दौरान जो देखा, तो सहसा मुँह से निकल पड़ा—'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे डी.ए.वी. कवि अपनी कविताओं के सस्वर पाठ से

श्रोता के अन्तरूतल को झक झोरता है तो डी.ए.वी. ज्ञान का दीप जलाकर उन अन्धेरी बस्तियों को उजागर करता है जहाँ शायद सूर्य की किरणों अपनी मध्यम प्रकाश ही फैला सकती होगी। उन जंगलों में 10+2 सी.बी.एस.सी. कोर्स विद्यालयों को संचालित कर रही है।

19 से 23 फरवरी 2018 के बीच छत्तीसगढ़ के प्रवास का अवसर वहाँ के स्कूलों के सहक्षेत्रीय निदेशक श्री प्रशान्त कुमार जी ने मुझे और अजय सहगल टंकारावाले को प्रदान किया। (कुछ विद्यालय के अध्यक्ष होने के नाते) 19 फरवरी को सायंकाल विमान द्वारा हम दिल्ली से रायपुर पहुँचे और विमान की सुखद यात्रा का अनुभव अच्छा रहा।

रायपुर हवाई अड्डे पर श्री प्रशान्त जी अपने सहयोगियों के साथ हमारे स्वागत के लिए उपस्थित थे। विमान पतन से सीधे रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान किया गया और वहाँ से अम्बिकापुर के लिए हम तीनों रात्रि गाड़ी से सफर करते हुए अम्बिकापुर प्रातः 8 बजे 20 फरवरी को पहुँचे। गाड़ी का कैसा अनुभव रहा, जरा आनन्द लीजिए।

लोहपथगामिनी में किया हमने आज शयन।

ए.सी. के आधिक्य को भी हमने किया सहन॥

हमने किया सहन, नींद भी अच्छी आई।

डी.ए.वी. के घटकों ने सोची हमारी भलाई॥

कहे 'वीर' सद्भाव से बनी यात्रा सुखदायिनी।

सोच समझ कर करना भाई यात्रा लोहपथ गामिनी॥

वहाँ से बलरामपुर के लिए वाहन में बैठ प्रस्थान हुआ। सभी गन्तव्य लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित थे भँवरमल स्कूल में इस स्कूल के अतिरिक्त वडराफनगर और राजपुर स्कूलज की एल.एम.सी. की बैठक हुई। अभिभावकों ने भी अपने विचार और सुझाव रखे।

जंगल के बीचों बीच भागती हुई हमारी कार जब बड़राफ नगर स्कूल पहुँची तो एक कक्षा में जब नन्हें-मुन्हें बच्चों को गुड मॉर्निंग सर' से स्वागत करते देखा तो आंखे नम हो आई क्योंकि आसपास की झोपड़ियों से आने वाले यह विद्यार्थी क्या कभी सोच सकते थे कि इस प्रकार आकर्षक यूनिफार्म पहन कर कुछ सीखने-पढ़ने के लिए वह स्कूल जा पाएंगे और अच्छे नागरिक बनकर निकलेंगे। ज्ञात रहे कि मीलों मील वहाँ कोई पक्की बस्ती नहीं है—केवल खपरैल के अलग-अलग कच्चे मकान हैं जहाँ से यह बालक-बालिकाएँ स्कूल में आती हैं। इसीदिन सायं विश्रामपुर स्कूल में भी मीटिंग थी।

21 फरवरी को अम्बिकापुर से प्रातः जशपुर के लिए प्रस्थान किया और डी.ए.वी. मुख्य मन्त्री स्कूल बागीचा में तीन स्कूलों की बैठक हुई। अपराहन सूरजपुर के लिए प्रस्थान और ओडगी में चार स्कूलों की एल.एम.सी. मीटिंग हुई। सारा मार्ग सर्प की गति के समान टेढ़ा, वृक्षों की पंक्तियों से अच्छमादित और सरसों की खेतों की महक लिए था। जरा बानगी देखिए:

पर्वतीय आगोश में घूमती है यह सड़क।

बाँस के झुरमुटों से आ रही है शुद्ध महक॥

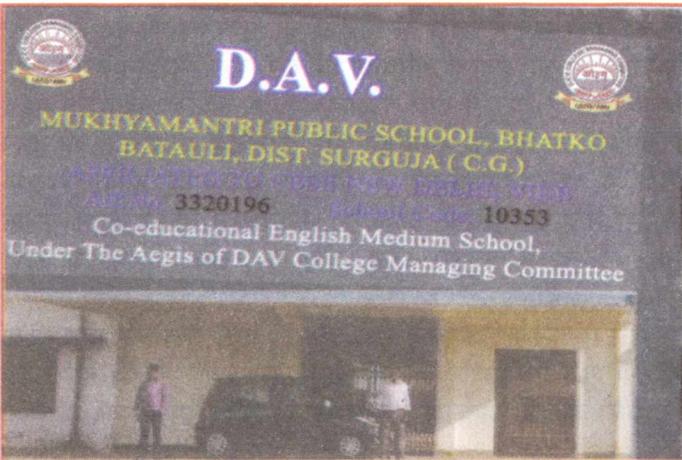
आ रही है शुद्ध महक, सरसों की पीतिमा।

देखते ही बनती है चहुँद्विंश हरीतिमा॥

कहें 'वीर' प्रसन्न हो वातावरण रहा अद्वितीय।

बार-बार आएंगे देखने आभा पर्वतीय।

(शेष पृष्ठ 19 पर)



सहनशीलता: सुखी और सरस जीवन का रहस्य

धैर्य, सहिष्णुता, सहनशीलता जीवन को मधुर और आनन्दमय बना देते हैं, यह कल्पना का नहीं अनुभव का विषय है और जिन्होंने इसका अनुभव नहीं किया है, वे जीवन के बहुमूल्य क्षणों से वंचित रह गए। उन लोगों को अपने जीवन का पुनर्अवलोकन कर आनन्द के क्षणों को अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा मनुष्य जन्म पाकर भी अमूल्य अनुभव से वंचित रह जायेंगे।

हम प्रायः प्रतिक्रिया का जीवन जीते हैं। किसी ने कुछ कहा या किया हम तत्काल उसका प्रत्युत्तर प्रतिक्रियात्मक रूप से ही देते हैं। क्रोध का उत्तर क्रोध से और ईंट का जवाब पत्थर से। हम कभी नहीं चाहेंगे कि हमारी हार हो या कोई हमें नीचा दिखाए। मित्रों के बीच हों या परिवार में, ऑफिस में हों या व्यापार में, भीड़ में हों या बाजार में, सर्वत्र हम विजयी या उच्चतम स्तर के दिखना चाहते हैं। “हम किसी से कम नहीं” यह जुमला दिमाग में इतना घर कर जाता है कि हम हार को कभी स्वीकार करना ही नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हमेशा हमारी जीत हो और सामने वाले की हार हो। जीत न हो तो ऐसे दुःखी हो जाते हैं जैसे आसमान टूट पड़ा है। जीवन में हार भी होती है और जीत भी। सुख भी आता है और दुःख भी। हम अनुकूल अथवा प्रतिकूल स्थिति में कैसे व्यवहार करते हैं, यही हमारे चरित्र को परिभाषित करता है। सुख तो सब चाहते हैं और दुःख कोई नहीं चाहता। जो दुःख अथवा प्रतिकूल परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लेता है वही अंत में विजयी होता है। यह तब संभव है जब हम अपने आप में सहनशीलता के गुण को विकसित करें। जो प्रतिकूल परिस्थिति में धैर्य न खो बैठे और समभाव में बना रहे वही व्यक्ति सहनशील कहलाता है।

क्रोध और अहं पर नियंत्रण- सहनशीलता अथवा धैर्य का गुण विकसित करने के लिए क्या करना चाहिए? इसकी प्राथमिक आवश्यकता है क्रोध पर नियंत्रण जिसका क्रोध पर नियंत्रण नहीं है वह कभी सहनशील नहीं बन सकता। क्रोध ही हमारी असहनशीलता की जड़ है। हमें कोई अपशब्द कह दे तो तिलमिला उठते हैं। अपशब्द तो बहुत दूर की बात है, हमारी त्रुटि इंगित करना अथवा कार्य की आलोचना भी सहन नहीं होती। जब कोई अनचाही बात होती है तो प्रतिक्रिया स्वरूप क्रोध करते हैं। क्रोध का कारण है अहं पर चोट लगना। हम मानते हैं कि जो घटना हुई है वह मेरे साथ नहीं होनी चाहिए थी और इससे मेरे मन को ठेस लगी है। मन या अहं (Ego) हमारी ही निर्मित वस्तु है और उसकी चोट उतनी ही अधिक महसूस करेंगे जितना बड़ा अभिमान हमने पाल रखा है। जो भी भौतिक उपलब्धियाँ हम प्राप्त कर लेते हैं चाहे वे पद, धन, विद्या, पंडिताई या किसी भी प्रकार की प्रतिष्ठा हो, ये सब हमारे अहं के पोषक हैं और अहं पर चोट महसूस करते हैं। आपकी बात न मानने पर कितनी चोट महसूस करते हैं। यह आपका समाज, ऑफिस या परिवार में आपका पद तय करेगा। पति की बात पत्नी न माने तो पति नाराज हो जायेगा, क्योंकि सदियों से यह सिखाया जा रहा है कि पति परमेश्वर है और पत्नी को पति की हर बात माननी चाहिए चाहे वह अनुचित ही क्यों न हो। पिता की बात बेटा/बेटी माने, बड़े भाई की बात छोटा माने, भाई की बात बहन माने, अफसर की बात मातहत (Subordinate) माने आदि। ये मान्यताएँ, परिपाटियाँ

हमारे संस्कारों में इतनी दृढ़ हो गयी हैं कि ये हमारे अहं (Ego) का पोषण करती हैं, क्रोध का कारण बनती हैं और हम असहनशील बन जाते हैं।

स्वार्थ पर नियंत्रण:- असहनशीलता का दूसरा प्रमुख कारण है हमारे निजी स्वार्थ को संभावित हानि। जिस वस्तु को हम चाहते हैं उसे कोई अन्य हथिला ले या प्राप्त कर ले तो हम उसे सहन नहीं कर पाएँगे। मुख्य रूप से हमारे लोभ या लालच से प्रेरित कोई भी वांछनीय वस्तु या व्यक्ति पर कोई हक जमाने की कोशिश करेगा तो वह हमारे लिए असहनीय होगा और क्रोध या कपट से उस प्रयास को असफल करने की कोशिश करेंगे। यदि हम शक्तिवान हैं तो पूरी शक्ति लगा कर सामने वाले को परास्त करेंगे। यह संघर्ष, हिंसा और कई अवांछित घटनाओं को जन्म देगा। लोभ पर नियंत्रण व त्याग भावना का उपयोग सहनशीलता को स्थापित करता है।

विचार भिन्नता:- विचारों में भिन्नता भी संघर्ष उत्पन्न करती है। विचारों में भिन्नता हो सकती है, परन्तु इसमें भी सहनशीलता आवश्यक है। यह जरूरी नहीं कि सब आपके विचार से सहमत हों। विचारों की स्वतन्त्रता हर एक का अधिकार है। प्रसिद्ध दार्शनिक वॉल्टर ने कहा कि-‘जो तुम कहते हो मैं उससे सहमत नहीं हूँ परन्तु तुम्हारे विचार प्रस्तुत करने के अधिकार की रक्षा मैं मृत्यु पर्यन्त करूँगा।’ (I disapprove of what you say, but will defend to the death your right to say it). विचारों में मतभेद से झगड़ा हो, अशांति हो यह प्रजातान्त्रिक प्रणाली व सुशिक्षित समाज के लिए अवांछनीय है। अधिकांशतः हम दूसरे आदमी के पक्ष को समझे बिना असहिष्णु बनकर झगड़ा करते हैं। उदाहरण के लिए एक सोने का हार एक दृष्टिकोण से आभूषण है, परन्तु जिस वस्तु से निर्मित है वह सोना है। अब कोई इस बात पर लड़ाई करे कि यह आभूषण नहीं सोना है तो यह हमारी नादानी है। वह सोना भी है और आभूषण भी। दोनों कथन सही हैं। इस तरह सामने वाले का पक्ष या दृष्टिकोण समझने पर असहनशीलता समाप्त हो जाती है।

सहनशीलता के सूत्र-मीठी वाणी और मौन:- एक-दूसरे का आदर करें और किसी का अनादर न करें या अपशब्द न बोलें तब ही सहनशीलता का वातावरण बनेगा। हम बोलते वक्त वाणी का संयम नहीं रखते और कड़वे वचन बोलते हैं अथवा गाली या अन्य अपशब्द कहते हैं जो क्रोधवश भी होते हैं या जानबूझकर किसी का तिरस्कार करने के लिए भी बोलते हैं तो संघर्ष उत्पन्न होता है। सहनशीलता के दो ही सूत्र हैं-मीठी वाणी और मौन। संतो ने मीठे वचन बोलने के अनेक दोहे कहे हैं और उनका अनुपालन ही हमारे स्वयं के, पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सरस बना सकता है।

मीठी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए।

औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

वाणी हमेशा मीठी होनी चाहिए। इससे सामने वाले का मन खुश हो जाता है। कड़वे वचन किसी को पसंद नहीं है। सत्य भी बोला जाय तो मीठा होना चाहिए। मीठे वचन से खुद भी ठण्डे रहते हैं और सामने वाला भी ठण्डा रहता है। उसके पास गर्म होने का कारण ही नहीं है। कई लोग परेशान होते हैं कि उनको कोई गाली दे तो चुप कैसे

रह सकते हैं? गाली क्यों सहन की जाय? गाली का जवाब गाली से दिया जाय तो तनाव बढ़ेगा, बात बढ़ेगी और सरसता के स्थान पर कटुता ही पनपेगी। इस पर संतो का निम्न दोहा बहुत मार्मिक है-

आवत गाली एक है, पलट होय अनेक।
ताको औषध मौन है, रहे एक ही एक॥

जब कोई गाली देता है तो एक ही गाली होती है परन्तु जैसे ही जवाब दिया जाता है तो वापस जवाब आता है और यों अनेक गालियाँ बन जाती हैं। क्रिया-प्रतिक्रिया का दौर समाप्त नहीं होता और एक गाली अनेक बन जाती हैं। कहते हैं गाली की दवा मौन है और तब जो गाली आई वह एक की एक ही रहेगी। उसका गुणनफल नहीं होगा। यह एक की एक ही रहेगी। मौन के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी तो जो गाली का दौर शुरु हुआ वहीं अंत हो जायेगा।

वाणी में शब्दों का बहुत महत्त्व है, अतः जो भी शब्द बोलें बहुत ध्यान से बोलें। शब्द बाण की तरह है, जो छूट गया तो वापस उसे नहीं ले सकते। बोलने से पहले तोलने की आवश्यकता है। इस पर एक कविता मनन एवं ध्यान करने योग्य है।

शब्द संभाले बोलिए, शब्द के हाथ न पांवा।
एक शब्द करे औषधि, एक शब्द करे घावा॥
शब्द संभाले बोलिए, शब्द खींचते ध्यान।
शब्द मन घायल करे, शब्द बढ़ाते मान॥
शब्द मुँह से छूट गया, शब्द न वापस आया।
शब्द जो हो प्यारा भरा, शब्द ही मन में समाया॥
शब्द में है भाव रंग का, शब्द है मान महान्।
शब्द जीवन रूप है, शब्द ही दुनिया जहान्।
शब्द ही कटुता रोप दे, शब्द ही बैर हटाया।
शब्द जोड़ दे टूटे मन, शब्द ही प्यार बढ़ाया॥

सहनशीलता सुखी और सरस जीवन का रहस्य है और उसके दो ही साधन हैं- 'मीठी वाणी और मौन'। इसमें सहनशीलता का रहस्य भरा है। इन दो उपायों से कटुता समाप्त हो जाती है और सहज ही सरस एवं सुन्दर परिवार, समाज और विश्व का निर्माण हो जाता है। (आओ मौन रहने का अभ्यास करते रहें, प्रारम्भ में दिन में एक घंटा मौन रहने का प्रयास करें और अभ्यास के साथ बढ़ते जायें।)

अजय टंकारावाला

आप ऋषि जन्मभूमि हेतु दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नेशनल बैंक, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0466500 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी है मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा दें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

टंकारा समाचार पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षों से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य हैं।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500 में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। (क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)

-प्रबन्धक

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

नारी-सशक्तीकरण

□ शशि शेखर झा

गुप्त जी ने यशोधरा के संदर्भ में नारी को अबला की संज्ञा देकर जिस सामाजिक अवधारणा की व्यंजना की है, उसकी पृष्ठभूमि मध्यकालीन लोकजीवन में क्रमशः अपदस्थ होती नारी की दशा में सुरक्षित है। वैदिक संस्कृति में नारी के श्रेष्ठतम गरिमामय स्वरूप के दर्शन होते हैं। वहाँ ममता, करुणा और त्याग की प्रतिमूर्ति नारी के चतुर्दिक समस्त पुरुष सत्ता परिभ्रमण करती हुई उसे शक्ति-स्वरूपा देवी के विभिन्न रूपों में पूजती दिखती है। शैव-दर्शन भी इस बात की स्वीकृति देता है कि शिव में शिवत्व की स्थापना आदिशक्ति नारी ही करती है। जीवन और प्राणों का पोषण-संवर्धन करने वाली प्रकृति को भी नारी रूप में ही पूज्या माना गया है। नारी में प्रकृति के स्वरूप की व्यंजना उसके सहज दैवीय गुणों के कारण ही की गई है। किन्तु, यदाकदा, प्रकृति श्रुब्ध-कुदध होकर विध्वंसक रूप अख्तियार कर लेती है। उसी प्रकार नारी भी अमानवीय और पैशाची प्रवृत्तियों के विरुद्ध संहार को आतुर रणचंडी दुर्गा और काली की प्रचंडता धारण कर लेती है जिसके समक्ष समस्त देवगण नतमस्तक हो जाते हैं।

किन्तु, पुरुष की क्षुद्र भोगवादी प्रवृत्ति उसे नारी के अलौकिक रूपरूप की उपेक्षा कर मांसल सौंदर्य के उपभोग्य की ओर उकसाती है तो इतिहास कलंकित हो उठता है। नारी के पूज्या से भोग्या बनाने वाले रावणों से आज हमारा समाज आक्रांत है। आज सीताओं के शीलहरण और द्रौपदियों के चीरहरण की अगणित घटनाएँ रोजमर्रा का विषय बन गई हैं। इन अपराधिक व अमानवीय दुर्वृत्तियों के शमनार्थ सरकार ने दंड-विधान के द्वारा नारी-सुरक्षा की पहल की है। बावजूद इसके आपराधिक घटनाओं में कभी नजर नहीं आती।

मध्यकालीन राजाओं, सामंतों एवं राजश्रित उच्चवर्गीय लोगों की विलासितापूर्ण भोगवादी जीवन-दृष्टि ने नारी की सांस्कृतिक मर्यादा को जो करारी चोट पहुँचाई, उसका दंश आधुनिक जीवन में भी विद्यमान है। नारी को अबला से सबला बनाने के सरकार के सारे प्रयास एक तरफ हैं और दूसरी लोगों की उद्दाम भौतिक भोगवादी प्रवृत्ति। पंतजी ने नारी के इसी युग-सापेक्ष सत्य को उकेरा है:-

योनि मात्र रह गई मानवी निज आत्मा कर अर्पण।

पुरुष प्रकृति की पशुता का पहने नैतिक आभूषण॥

वस्तुतः पुरुष ने नारी को उपभोग की एक सामग्री के रूप में स्वयं के लिए सुरक्षित करने के निमित्त तरह-तरह के नैतिक एवं सामाजिक बेड़ियों से जकड़कर उसे ऐसा बना डाला कि वह शक्तिस्वरूपा जगत्विधात्री का प्रतिरूप है।

किन्तु, स्वतन्त्रता के पश्चात् जीवन के सभी क्षेत्रों में एक नई चेतना, एक नई दृष्टि और एक नये सकारात्मक परिवर्तन की लहर

व्याप्त हुई। नारी-विषयक तमाम सामाजिक व नैतिक मानदंडों पर पुनर्विचार और उनके पुनर्मूल्यांकन की दिशा में प्रयास शुरु हुए। नारी को सतीप्रथा और बाल-विवाह की अभिशाप्त काश से विमुक्त कर राजा राममोहन राय ने जिस नव उन्मेष की दिशा प्रदान की थी, उसके परिणामस्वरूप भारतेन्दु राय ने जिस नव उन्मेष की दिशा प्रदान की थी, उसके परिणामस्वरूप भारतेन्दु और द्विवेदी जी तक आते-आते नारी-जीवन के कलेवर में सार्थक परिवर्तन नजर आने लगा था। अब नारी के सहअस्तित्वपरक मान्यताओं को बल मिलने लगा था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में गाँधीजी के आह्वान पर अग्रसर होनेवाली नारियों की भूमिका रानी लक्ष्मीबाई ने पूर्व में ही निर्धारित कर दी थी और गाँधी ने तो स्पष्ट घोषणा कर दी कि नारी शक्ति का सहयोग जब तक प्राप्त नहीं होता तब तक स्वतन्त्रता के सारे संघर्ष अधूरे और एकांगी होंगे।

समाज में नारी को उचित सम्मान प्राप्त कर सिर उठकर जीने का अधिकार शिक्षा, सम्पत्ति, स्वतन्त्रतापूर्वक, आवागमन आदि के तमाम वैधानिक अधिकार प्रदान कर उसे एक सहज-स्वाभाविक मानवीय जीवन जीने की दिशा में जो उदारतापूर्ण दृष्टि अपनायी है, वह नारी के प्राचीन सामाजिक मूल्य की पुनर्स्थापना के ही प्रयास हैं। परिणामस्वरूप आज साहित्य हो या कला-कौशल, विज्ञान हो या व्यापार-विनिमय, संचार हो या उद्योग-प्रौद्योगिकी, राजनीति हो या खेल, समाज-सेवा हो या नृविज्ञान-सर्वत्र महिलाओं ने राष्ट्र-निर्माण और विकास की दिशा में अपनी सफल भूमिका का सहज-बोध कराया है। आज नारी पुरुष की वैशाखी का मुँहताज नहीं, ही परवरिश के लिए किसी अन्य पर निर्भर है। आज उसने परवशता और दासत्व का रूढ़िग्रस्त पारंपरिक कंचुल उतारकर आत्मनिर्भरता का सहज-स्वाभाविक स्वरूप अख्तियार करने की दिशा में अग्रसर दिखती है जो स्वागत योग्य है।

किन्तु, तमाम वैधानिक स्वीकृतियों के सहयोग से नारी के विकास का जो परिदृश्य सामने आया है, वह पर्याप्त नहीं है। आज भी उसे सामाजिक व नैतिक मूल्य प्राप्त करने की अपेक्षा बरकरार है। आप भी हमारा पुरुष-प्रधान समाज नारी को अपने भोगवादी कठघरे से बाहर आजाद करने में कहीं न कहीं अपनी संकीर्णता बरतता दिखाई देता है। यह न सिर्फ नारी के विकास में बाधा है, बल्कि एक समुन्नत राष्ट्र के निर्माण में भी अड़चन पैदा करता है। आज आवश्यकता है नारी सशक्तीकरण की तमाम वैधानिक स्वीकृतियों को सामाजिक व नैतिक स्वीकृति बनाने की, अपनी सोच को परिष्कृत और व्यापक आयाम देने की। आईए! हम सब मिलकर अबला को सबला बनाने और भोग्य को योग्या बनाने की दिशा में अपनी भूमिका को सार्थक आयाम दें।

- एस.आर.डी.ए.वी. प. स्कूल, चूनापूर रोड, पूर्णियां (बिहार)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल शिविर सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में इस वर्ष का राष्ट्रीय शिविर दिनांक 27 मई 2018 से 3 जून, 2018 तक इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में लगाया जायेगा। कृप्या अधिक से अधिक वीरांगनाये शिविर में पहुँच कर इस अवसर का लाभ उठायें।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका, 9672286863

मृदुला चौहान, संचालिका, 9810702760, आरती खुराना, सचिव, 9910234595

विमला मलिक, कोषाध्यक्ष, 7289915010

क्रियाशील: सात्विक अन्न सेवन से

□ डॉ. अशोक आर्य

हम सदा सात्विक अन्न का सेवन करें। सात्विक अन्न के सेवन से क्रियाशीलता बढ़ती है। क्रियाशील व्यक्ति ही शुभ कर्म कर सकता है। क्रियाशील व्यक्ति ही अन्य लोगों का पालन कर सकता है। हम ऐसा ही बनें, इस बात को ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के इस त्रितीय सूक्त के प्रथम मन्त्र में इस प्रकार बताया गया है:-

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्याणी शुभस्ती।

पुरुभुजा चनस्यतम्॥ ऋग्वेद 1.3.1॥

1. **सात्विक भोजन-** इस मन्त्र में जो प्रथम प्रार्थना की गयी है, अश्विन कुमारों से जो प्रथम चीज मांगी गई है, वह है सात्विक भोजन। सात्विक भोजन की मांग करते हुए प्रार्थना की है कि हे प्राणापाणों! मैं यज्ञशील बनना चाहता हूँ, इस लिए आप ऐसी व्यवस्था करें कि मैं यज्ञशील बनने के लिए सात्विक अन्न खाने की ही इच्छा करूँ। सात्विक भोजन एक ऐसा साधन है, जिससे शरीर के विकार पैदा ही नहीं हो पाते तथा पहले से होते हैं, वह भी दूर हो जाते हैं। शारीरिक व्याधियों से बचे हुए भली प्रकार से यज्ञ आदि कर्म कर सकते हैं। इसलिए प्रभु हमारे लिए ऐसा अन्न दो, जो सात्विक हो, हम ऐसे अन्न का ही सदा सेवन करें। सात्विक अन्न के सेवन से हमारी बुद्धि भी सात्विक होती है। सात्विक बुद्धि ही जीवन को यज्ञमय बनाने का कार्य करती है। इसलिए हम सदा सात्विक भोजन करें।

2. **क्रियाशील हो शुभ कार्य करें:-** सात्विक भोजन करने वाले के प्राणापान स्वयमेव ही सुरक्षित हाथों में चले जाते हैं। इस मन्त्र में भी यही कामना की गयी है कि हे प्रभु! सात्विक भोजन करने से हमारे प्राणापान सात्विक होने पर हम गतिशील हाथों वाले हों, क्रियाशील हों, कार्यशील हो, अकर्मण्यता से, कार्य से मन चुराने से सदा दूर रहें। इस प्रकार हम जो क्रियाशील बन कर भी हम ऐसी क्रिया करें, ऐसे कार्य करें, जो शुभ हों। हम अपने कर्मों से सदा शुभ कर्म ही करें। इस प्रकार हम शुभ कर्मों के प्रति, अधिपति, साधक और अधिकारी बनें। हम जो भी कर्म करें,

जो भी कार्य करें, जो भी क्रिया करें, उसका परिणाम शुभ ही हो अर्थात् हमारी क्रियाशीलता से सदा शुभ ही शुभ प्रकट हो, दिखाई दे। हम अपनी क्रियाशीलता स्वरूप जो भी कर्म करें, उन कर्मों से कभी भी चपलता या दुष्टता न प्रकट हो, दुष्ट कर्म हम कभी न करें।

शुभ कर्म करते हुए हम अनेक लोगों का, अनेक प्राणियों का पालन करने वाले बनें प्राणियों के सहयोगी बनें, उनके कष्टों में उनके सहायक बनें।

शुभ से क्या अभिप्राय है? शुभ का अभिप्राय है ऐसे कर्म, जिनसे लोगों को लाभ हो, लोगों का शुभ हो, ऐसे कर्म जो केवल अपने लिए ही शुभ न करे अपितु अन्य लोगों का भी शुभ करें, अन्य लोगों का भी पालन करें, अन्य लोगों को भी उन्नत करें। अतः ऐसे कार्य, ऐसे कर्म, जिनके करने से अपने शुभ के साथ ही साथ अन्य लोगों का भी हित करने वाले हों, यह ही सत्य है, यह ही शुभ है। अतः हम उत्तम, परहितकारी कर्म करें। इस मन्त्र की यह पंक्ति यह ही आदेश दे रही है।

3. प्राणापान को अश्विना शब्द से स्मरण क्यों किया गया है?

अश्विना शब्द नाश्वान के लिए प्रयोग होता है। जहां तक प्राणों का सम्बन्ध है, यह स्थायी नहीं हैं, यह कभी भी तथा कहीं भी रुक सकते हैं। यह रहेंगे या नहीं इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी नहीं पता। यह शरीर इन प्राणों के आधार पर क्रिया में रहता है या नहीं, क्रिया कर पाने में सक्षम रहता भी है या नहीं, यह भी हम नहीं जानते। हां! इन प्राणों की क्रियाशीलता ही हमें चलाती है, इनकी क्रियाशीलता से ही हमें भूख लगती है,

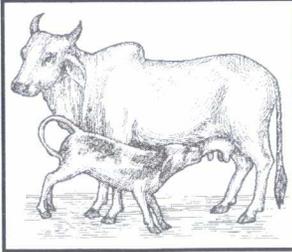
इनकी क्रिया शीलता ही हमें संसार में ऊँचा ले जाती है। इसलिए मन्त्र में कहा गया है कि हे मानव! तूने सदा सात्विक अन्न की ही इच्छा करनी है, सात्विक अन्न की ही कामना करनी है, सात्विक अन्न प्राप्ति की ही अभिलाषा करनी है। यह सात्विक अन्न ही तेरा कल्याण करेगा।

- पॉकेट 1 प्लॉट 61, रामप्रस्थ ग्रीन से 7, वैशाली 201010, गाजियाबाद, उ.प्र.

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये



प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति

डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम **चैक/ ड्राफ्ट** द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि त्रायकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

ज्ञान-बोध यात्रा

□ प्रि. जे. पी. सूर

युग प्रवर्तक तथा सामाजिक परिवर्तन क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में प्रख्यात शिक्षाविद् एवं दार्शनिक पद्मश्री सम्मान से अलंकृत आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी के वरद् आशीर्वाद प्रेरणा व कुशल मार्गदर्शन में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए 12 फरवरी, 2018 से 14 फरवरी, 2018 तक गुजरात के टंकारा में एक विशाल भव्य आयोजन किया गया जिसमें प्रिं. जे.पी. शूर निदेशक (पी.एस. 1) व अनुदानित विद्यालय डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित हुए।

श्री अजय सहगल ने तीन दिन तक चलने वाले इस महान् आयोजन का मंच संचालन विधिवत एवं सुचारू रूप से किया। उन्होंने अपनी वाणी की माधुर्यता व परिपक्वता का परिचय देते हुए समस्त आर्य जनों का मनमोह लिया।

इस भव्य एवम् आकर्षक कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से 10 हजार से अधिक आर्यजनों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य जगत् की महान विभूतियों, विद्वानों, शिक्षाविदों व दार्शनिकों की उपस्थिति में 12 फरवरी 2018 को पावन हवन यज्ञ ब्रह्म आचार्य रामदेव जी के सान्निध्य में सम्पन्न किया गया जिसमें प्रिं. जे.पी. शूर जी ने मुख्य यजमान के तौर पर पावन हवन-यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित की। मुंजाल परिवार से श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल एवम् अन्य पारिवारिक सदस्यों ने यजमान के तौर पर आहुतियाँ डाली। इस मंगल अवसर पर प्रिं. जे.पी. शूर जी ने अपने करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण किया जो अपने आप में ज्ञान-मशाल की प्रतीक मानी जाती है। उनके अनुसार यह विशाल भव्य आयोजन मानों आर्य समाज के रंग में रंग गया हो।

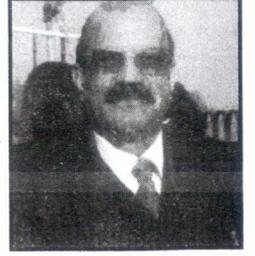
इस अवसर पर प्रख्यात भजनोंपदेशक पं. सत्यपाल पथिक एवं दिनेश पथिक जी ने भक्ति संगीत के माध्यम से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। समारोह के मुख्यातिथि प्रिं. जे.पी. शूर जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि महाशिवरात्रि के अवसर पर ही आर्य समाज के जनक बालक मूलशंकर को ज्ञानबोध हुआ और फिर बालक मूलशंकर अनेक स्थानों का भ्रमण करने के उपरान्त अन्ततः गुरु विरजानन्द जी की चरण-शरण को प्राप्त हुए तथा वेद विद्या में पारंगत होने पर बालक मूलशंकर से दयानन्द हुए। बस यही से शुरु हुई ज्ञान-प्रकाश की एक अनन्त यात्रा जो आर्य समाज की उत्पत्ति के साथ ही एक महान सामाजिक परिवर्तन की महान क्रान्ति के रूप में परिवर्तित हो गई। इसी ज्ञान पर्व को ऋषिबोधोत्सव का पावन नाम दिया गया। तब से लेकर आज तक आर्य समाज को पावन वैचारिक क्रान्ति के माध्यम से विभिन्न सामाजिक कुरीतियों एवं बुराइयों को सदा के लिए नेस्तनाबूद करने के लिए परम सम्मानीय पद्मश्री सम्मान से अलंकृत आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी जी ज्ञान-प्रकाश की प्रतीक इस महान मशाल को थाम कर देश-विदेश में आर्य समाज की इस पुनीत विचारधारा की सरिता को प्रवाहित कर रहे हैं। भारतवर्ष की इस पावन धरा टंकारा से समस्त मानवजाति को ज्ञान का महान सन्देश दिया कि वह ईश्वर एक है, अनन्त है, चेतन है तथा जड़ पदार्थों में उसे ढूँढने का निष्फल प्रयास कदापि नहीं करना चाहिए।

उन्होंने अपने सन्देश में यह भी कहा कि हम सभी बहुत ही सौभाग्यशाली हैं जिन्हें ऋषिवर के उस ज्ञान-बोध स्थल को देखने का

स्वर्णिम् अवसर प्राप्त हुआ जहाँ से समस्त आर्य-जन इस शुभ अवसर पर यह संकल्प करते हैं कि ऋषिवर दयानन्द सरस्वती जी के इस महान स्वप्न को साकार करने के लिए हम निरन्तर एवम् सतत् प्रयास जारी रखेंगे। इस सुखद यात्रा के अनुभव को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं बताना चाहता हूँ कि समस्त मानव जाति को अज्ञान रूपी अन्धकार से ज्ञान के उजाले में लाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के रूप में गुजरात की पावन धरती टंकारा में जो ज्ञान का सूर्योदय हुआ था, वहाँ इस पावन स्थल के दर्शन करने से मेरी जीवन की तो दिशा ही बदल गई। मानों हृदय पर छाएँ संशय के बादल छट गए और चित्त शान्त हो गया। मेरा जीवन तो यहाँ आकर धन्य हो गया। मुख्यातिथि के अनुसार आज उस समय की अपेक्षा आज के युग में महर्षि जी की सोच पर पहरा देने तथा उनके पदचिन्हों पर चलने की कहीं अधिक आवश्यकता है। स्मरण रहे कि आज पुनः हमारे समाज में तामसी प्रवृत्तियाँ सिर उठा रही हैं। इन तामसी प्रवृत्तियों व सामाजिक बुराइयों को समूल नष्ट करने के लिए हमें महर्षि जी को क्रान्तिमयी सोच को जन-जन में समाहित करना होगा। वैदिक संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार के लिए हमें वेदों में दर्शाएँ मार्ग चलने के लिए सभी को प्रेरित करना होगा तभी यह राष्ट्र पुनः उन्नति एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा। आज के समय की मांग है कि हम शिक्षा के माध्यम से युवा-वर्ग में वैदिक संस्कृति का संचार करें। युवा ही इस देश की रीढ़ हैं। उन्हीं की युवाशक्ति को सन्मार्ग पर लाकर हम आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार से राष्ट्र का हित कर सकते हैं। आर्य समाज का एक ही महान संदेश जो ऋषिबोधोत्सव के महान अवसर पर प्रेषित किया गया कि आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार से हमारा भारतीय समाज न केवल सामाजिक बुराइयों से विमुक्त हो रहा है प्रत्युत हमारा समाज व देश नशा एवं भ्रष्टाचार विमुक्त होने की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। आर्य समाज एवम् डी. ए.वी. शिक्षा-संस्थाएँ जल-संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने में भी आर्य समाज सक्रिय रूप से योगदान दे रहा है।

ऋषिबोधोत्सव के पावन पर्व पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए प्रख्यात वैदिक वक्ता एवं महान शिक्षाविद् व दार्शनिक डॉ. रूप किशोर शास्त्री जी ने विश्व की प्राचीनतम् भाषा देव वाणी संस्कृत भाषा के विकास, प्रचार एवं प्रसार के लिए सभी आर्य समाजों और डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं को अपनी वचनबद्धता सुनिश्चित करने का जोरदार आहवान किया। उन्होंने विशेष रूप से आर्य समाजों व डी.ए.वी. संस्थानों से संस्कृत भाषा के उत्थान के लिए आगे आने के लिए कहा क्योंकि संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की जननी है। इसका व्याकरण एक दम सटीम एवं वैज्ञानिक है। संस्कृत भाषा में शब्द व्युत्पत्ति एवं संरचना अद्भुत हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रमुख वक्ताओं ने भी विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज की पावन विचारधारा व वैदिक संस्कृति को आत्मसात करने का आहवान किया।

इस मंगल वेला पर वयोवृद्ध प्रख्यात आर्य समाजी श्री कमलेश शुक्ला जी ने आर्य बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि पहले मैं एक मूर्त्तिकार था लेकिन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं से प्रभावित हो कर मैंने योग और वेदों के अनुसार जीवन बिताना प्रारम्भ कर दिया है। मैं हृदय के अन्तःकरण से बताना चाहता हूँ कि मेरी



लम्बी आयु का रहस्य भी यही है। महर्षि जी के बताए हुए मार्ग पर चलने से मेरे जीवन का मानो उद्धार हो गया। अब योगदर्शन एवं वेदाध्ययन मेरे जीवन के पर्याय बन गए हैं।

प्रिं. जे.पी. शूर जी ने कहा कि इस विशाल एवं भव्य आयोजन की सफलता का श्रेय संचालक श्री अजय सहगल, अन्य समस्त पदाधिकारियों व कर्मठ कार्यकर्ताओं को जाता है जिनकी देख-रेख में कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले अनेकों आर्य जनों के ठहरने, भोजन-व्यवस्था तथा लघु औषधालय का सुचारू प्रबन्ध संभव हो सका।

इस विशाल एवं भव्य समारोह के सुचारू संचालन के सन्दर्भ में बताते हुए प्रिं. जे.पी. शूर जी ने कहा कि श्री अजय सहगल एक अत्यन्त कर्मठ एवं समर्पित आर्य समाजी है जिन्होंने दिन-रात एक करते हुए इस महान आयोजन को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि महोदय ने उन सभी आर्य बन्धुओं, आर्य समाज के

पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं व अन्य महानुभावों को इस महान व विशाल आयोजन को सफल बनाने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर देश के कोने-कोने से आर्य बंधुओं के अतिरिक्त महान शिक्षाविदों में प्रिं. जे.पी. शूर, प्रिं. डॉ. राजेश कुमार, डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर, प्रिं. अंजना गुप्ता, डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल, अमृतसर, प्रिं. अजय बेरी, डी.ए.वी. सीनियर सैकण्डी स्कूल, हाथी गेट, अमृतसर, प्रिं. परमजीत कुमार, एम.के.डी.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, अटारी व अन्य महानुभाव सम्मिलित हुए। उल्लेखनीय है कि डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं के ये समस्त प्राचार्य प्रथम बार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुजरात स्थित टंकारा में इस पावन एवं दुर्लभ ऋषि बोध उत्सव स्थल के दर्शन करने पहुँच थे। इन महानुभावों के अनुसार ऋषि बोधोत्सव स्थल के मंगल दर्शन उनके लिए अद्भुत संयोग एवं सुखद अनुभव रहा। इस अवसर पर समस्त प्राचार्यों ने महर्षि जी के दर्शाए गए मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प एवं प्रण लिया।

- निदेशक (पी.एस.-1), डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधक समिति, नई दिल्ली

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहाँ एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/- रुपये व्यय आ रहा है, जिससे हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएँ अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहाँ इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजे हैं जहाँ इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उद्धार होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **‘श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा’** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

सफलता के शिखर देखने है तो आंखे खोलकर बड़े सपने देखो

□ सीताराम गुप्ता

कहा गया है कि इस सृष्टि की रचना प्रभु की इच्छा मात्र से हो गई। सोऽकामयत। बहुस्यां प्रजायेयेति। उस परमात्मा ने कामना की कि मैं एक से अनेक या बहुत हो जाऊँ। प्रभु ने चाहा, कल्पना की और सृष्टि का सृजन प्रारंभ हो गया। ऋग्वेद में कहा गया है कि प्रारंभ में न अस्तित्व था और न ही अनस्तित्व। संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक अदृश्य ऊर्जा था। बहुत पहले सचमुच कुछ नहीं था। एक शून्य से, एक निर्वात से इस सृष्टि की उत्पत्ति प्रारंभ हुई ऐसा वेदों में कहा गया है। यदि हम साधारण शब्दों में कहें तो हमारे कल्पना रूपी ईश्वर की कल्पना मात्र से ही यह सृष्टि अस्तित्व में आई। कल्पना जिसे सपना भी कह सकते हैं उसका बहुत महत्व है। ईश्वर भी कल्पनाशील अथवा स्वप्नदर्शी था और है और मनुष्य भी कल्पनाशील अथवा स्वप्नदर्शी है और रहेगा। यह सारा हमारी संसार कल्पनाशीलता, स्वप्नदर्षिता अथवा हमारे मनोभावों की चित्रवीथी है। सामूहिक समग्र कल्पनाशीलता, स्वप्नदर्षिता अथवा चिंतन का ही परिणाम है यह दृश्य जगत्। जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित है इससे। भौतिक समृद्धि हो अथवा सामाजिक व्यवस्था सभी कुछ मनुष्य के स्वयं के तथा समाज के सामूहिक सपनों, विचारों व कर्मों का ही प्रतिफल है।

विश्व देशों में हर साल 11 मार्च को 'ड्रीम डे' अथवा 'स्वप्न दिवस' मनाया जाता है। हर साल 'ड्रीम डे' अथवा 'स्वप्न दिवस' मनाने का क्या औचित्य हो सकता है? अधिकांश व्यक्ति प्रायः ये कहते हैं कि शेख चिल्ली मत बनो, हवाई किले मत बनाओ या दिन में सपने देखना छोड़ दो क्योंकि ये सपने कभी पूरे नहीं होते लेकिन आज ये बात सिद्ध हो चुकी है कि जीवन में आगे बढ़ने या कुछ बेहतर परिणाम पाने के लिए दिन में सपने देखना बहुत ज़रूरी है। हमारा भविष्य हमारे सपनों के अनुरूप ही आकार ग्रहण करता है। आज दुनिया में जो लोग भी सफलता के ऊँचे पायदानों पर पहुँचे हैं वो अपने सपनों की बदौलत ही ऐसा कर पाए हैं और जो लोग किसी भी क्षेत्र में सबसे नीचे के पायदान से भी नीचे हैं वो भी अपने कमज़ोर व विकृत सपनों के कारण ही वहाँ हैं। जीवन में सफलता अथवा असफलता की इसी अवधारणा या वास्तविकता से लोगों को अवगत करवाने के लिए ही हर साल 11 मार्च को 'ड्रीम डे' अथवा 'स्वप्न दिवस' मनाया जाता है।

प्रश्न उठता है कि हम जिस सपने की बात कर रहे हैं वो सपना क्या होता है? क्या हम सोते समय नींद में आने वाले सपनों की बात कर रहे हैं? नहीं, हम एक दूसरे ही सपने की बात कर रहे हैं जो नींद में नहीं खुली आँखों से देखा जाता है। डॉक्टर अब्दुल कलाम साहब ने कहा है कि सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक्त नींद में देखते हैं अपितु सपने वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते। वास्तव में जीवन में कुछ करने या पाने की जो उत्कट इच्छा, बेचैनी या तड़प होती है वो व्यक्ति का सपना ही होता है। ऐसे सपने नींद में नहीं जागते हुए और सोच-समझकर देखे जाते हैं। रात को नींद में हम सपने देखते नहीं अपितु वे स्वयं हमारी नींद में आ उपस्थित होते हैं जिन्हें हम प्रायः भूल जाते हैं और वो हमें बेचैन भी नहीं करते। जो सही मायनों में हमें बेचैन कर दे, हमें सोने न दे व हमें आगे बढ़ने के लिए विवश कर दे वही एक सार्थक सपना है

और ऐसे सपने पाले जाते हैं। सपना पालने के बाद उसकी देख-भाल व परवरिश की जाती है ताकि वो अपने अंजाम तक पहुँच सके।

अमेरिका में 'ड्रीम डे' अथवा 'स्वप्न दिवस' के अवसर पर जार्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन, मार्टिन लूथर किंग, बराक ओबामा जैसे उन सफलतम लोगों को याद किया जाता है जिन्होंने न केवल महान सपने पाले अपितु उन्हें सच कर दिखाया। इस सूची में एक नाम और जुड़ गया है और वो नाम है नवनिर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का। वो चाहे जितने विवादास्पद हों लेकिन उनमें ऊँचे सपने देखने और उन्हें पूरा करने की अद्भुत क्षमता है। अनेक प्रेरक लेखकों ने अपनी पुस्तकों में डॉनल्ड ट्रंप की पर्याप्त चर्चा की है। उनका राष्ट्रपति पद पर चुना जाना महज़ इतिहास नहीं एक बड़े सपने की पूर्णता है। सपने देखना एक कला ही नहीं अपितु एक उत्कृष्ट कला है। जिस किसी ने भी सही सपने चुनने और देखने की कला विकसित की है वही संसार में सबसे ऊपर पहुँच सका है। ऊपर पहुँचने का अर्थ केवल धन-दौलत कमाने तक सीमित नहीं है अपितु जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति व विकास से है। अच्छा भौतिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक उन्नति अथवा खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन की इच्छा भी अच्छे सपने हो सकते हैं। खेलों के क्षेत्र में तो विशेष रूप से अनेकानेक खिलाड़ियों ने अपने सपनों के बल पर ही उत्कृष्टता अथवा विजय प्राप्त की है ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

एक उदाहरण विल्मा रुडोल्फ का है। विल्मा रुडोल्फ एक अश्वेत अमेरिकी बालिका थी जिसे चार वर्ष की आयु में डबल निमोनिया और काला बुखार होने से पोलियो हो गया और फलस्वरूप उसे पैरों में ब्रेस पहननी पड़ी। विल्मा रुडोल्फ ग्यारह वर्ष की उम्र तक चल फिर भी नहीं सकती थी लेकिन उसने एक सपना पाल रखा था कि उसे दुनिया की सबसे तेज़ धाविका बनना है। डॉक्टर के मना करने के बावजूद विल्मा रुडोल्फ ने अपने पैरों की ब्रेस उतार फेंकी और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर अभ्यास में जुट गई। अपने सपने को मन में प्रगाढ़ किये हुए वह निरंतर अभ्यास करती रही। उसने अपने आत्मविश्वास को इतना ऊँचा कर लिया कि असंभव सी लगने वाली बात पूरी कर दिखलाई। वर्ष 1960 में इटली की राजधानी रोम में 25 अगस्त से 11 सितंबर तक होने वाले ओलंपिक खेलों वह इतनी तेज़ दौड़ी, इतनी तेज़ दौड़ी कि उस वर्ष के ओलंपिक मुक़ाबलों में तीन स्वर्ण पदक जीत कर दुनिया की सबसे तेज़ धाविका बन गई। सफलता के लिए पुरुषार्थ अथवा अभ्यास करने की प्रेरणा उसे कहाँ से मिली? स्पष्ट है अपने अंदर पल रहे सपने से जिसने विषम परिस्थितियों के बावजूद उसे निरंतर अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया।

जो लोग अपेक्षित ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाते ज़रूर उनके सपनों व उन्हें देखने के तरीकों में कोई कमी रहती होगी। प्रश्न उठता है कि सही सपनों का चुनाव कैसे करें और कैसे उन्हें देखें? वास्तविकता ये है कि हमारा मन कभी चैन से नहीं बैठता। उसमें निरंतर विचार उत्पन्न होते रहते हैं। एक विचार जाता है तो दूसरा आ जाता है। हर घंटे सैकड़ों विचार आते हैं और नष्ट हो जाते हैं। ये विचार हमारी इच्छाओं के वशीभूत होकर ही उठते हैं। ये हमारे सपने ही होते हैं। सपनों का

प्रारंभिक स्वरूप हमारे विचारों में ही छुपा रहता है। हमारे अवचेतन व अचेतन मन में विचारों की कमी नहीं होती। पूरे जीवन के अच्छे व बुरे सभी अनुभव इनमें संग्रहित रहते हैं। ये अनुभव ही हमारे विचारों के मूल में होते हैं। इन असंख्य विचारों में से जो विचार जीवन या भौतिक जगत में वास्तविकता ग्रहण कर लेता है वो एक सपने की पूर्णता ही होती है। कई बार हमें अपने इस सपने की जानकारी भी नहीं होती। सपने की जानकारी न होने से सपने की जानकारी होना बेहतर ही नहीं बेहतर ही है।

संभावना कम नहीं रहती है कि गलत विचार हमारा सपना बनकर हमें तबाह कर डाले। अतः नींद में नहीं अपितु खुली आँखों से सोच-समझकर सपने देखना ही श्रेयस्कर है। अब प्रश्न उठता है कि सही विचारों अथवा सपनों के चयन के लिए क्या किया जाए? जहाँ तक विचारों के सही होने का प्रश्न है सही विचार केवल सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा ही संभव हैं। यह स्वयं में एक अलग विस्तृत विषय है। यहाँ हम सही विचारों के चयन की बात करेंगे। सही विचारों के चयन के लिए विचारों को देखकर उनका विश्लेषण करना और उनमें से किसी अच्छे उपयोगी विचार का चयन करना अपेक्षित है। जब हम रोजमर्रा की सामान्य अवस्था में होते हैं तो न तो विचारों को सही-सही देखना ही संभव है और न उनका विश्लेषण करना ही। इसके लिए मस्तिष्क की शांत-स्थिर अवस्था अपेक्षित है। ध्यान द्वारा यह स्थिति प्राप्त की जा सकती है। ध्यान योग का एक अंग है। सही सपने के चुनाव व उसकी पूर्णता में योग के आंतरिक अंगों विशेष रूप से प्रत्याहार, धारणा व ध्यान का महत्वपूर्ण योगदान अनिवार्य है। शवासन अथवा योगनिद्रा से भी इसमें सहायता ली जा सकती है।

मस्तिष्क की चंचलता कम हो जाने पर जब हम शांत-स्थिर हो जाते हैं तो उस अवस्था में विचारों को देखना और उनका विश्लेषण करना संभव हो जाता है। योगनिद्रा अथवा शवासन ऐसे ही अभ्यास है जिसके द्वारा हम मन पर नियंत्रण द्वारा गलत विचारों से मुक्त होकर सही विचारों को प्रभावी बना सकते हैं व उन्हें एक सपने के रूप में विकसित कर सकते हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है योग द्वारा निद्रा की स्थिति प्राप्त करना ही योगनिद्रा है। योगसूत्र में कहा गया है 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः' अर्थात् चित्तवृत्तियों अथवा मन के क्रियाकलापों पर नियंत्रण ही योग है। योगनिद्रा 'नो थॉट स्टेट' जैसी अवस्था है। शवासन भी शव के समान निष्चल व विचार शून्य हो जाने की प्रक्रिया है। सुषुप्ति और जाग्रतावस्था की निद्रा में अंतर होता है। सुषुप्तावस्था की निद्रा में मन हमारे नियंत्रण में नहीं होता जबकि जाग्रतावस्था की निद्रा में मन हमारे पूर्ण नियंत्रण में होता है। मन पर नियंत्रण का अर्थ है हम मन को अपने लाभ के लिए प्रयोग कर सकते हैं। इसी स्थिति में अपनी इच्छाओं और संकल्पों को मन में फीड कर सकते हैं। मन की सकारात्मक उपयोगी विचारों के लिए कंडीशनिंग की जा सकती है। यह गहन निद्रा में प्रवेश करने से ठीक पहले की अवस्था है।

इस अवस्था को हम चाहे जो नाम दें उस समय हमें चाहिए कि हम अनुपयोगी नकारात्मक विचारों पर ध्यान न देकर केवल उपयोगी सकारात्मक उदात्त विचारों पर संपूर्ण ध्यान केंद्रित कर लें। हम जो चाहते हैं मन ही मन उसे दोहराएँ। उसी विचार के भाव को पूर्ण एकाग्रता के साथ मन में लाएँ। उस भाव को अपनी कल्पना में चित्र के रूप में देखें। कई व्यक्ति इस प्रयास में पूरी तरह से फल नहीं होते। हम

सब सपने तो देखते हैं लेकिन एक सपना देखना भूल जाते हैं और वो सपना है अपने सपनों को सच होने के विश्वास का सपना। ढेर सारे सपने देखिए और ये सपना भी जरूर देखिए कि मेरे सारे सपने पूरे हो रहे हैं। पहले सपने को हम संकल्प कह सकते हैं और दूसरे को विश्वास। संकल्प और उनको पूरा होने का दृढ़ विश्वास ही जीवन में आघातीत फलता की कुंजी है। अपने विचार, भाव या सपने को चित्र के रूप में देखना सबसे अधिक महत्वपूर्ण व फलदायी होता है। हम पूरे घटनाक्रम को एक फिल्म की तरह भी देख सकते हैं।

आपका जो सपना है उसे एक फिल्म की तरह अथवा उस सपने की परिणति को एक चित्र की तरह देखें। उस फिल्म अथवा चित्र से उतना ही प्रसन्न होने का प्रयास करें जितना वास्तविक सफलता की स्थितियों प्रसन्न होते हैं। आपकी फिल्म अथवा चित्र जितना अधिक स्पष्ट होगा, आपका रोमांच अथवा आपकी प्रसन्नतानुभूति जितनी अधिक होगी सपने की सफलता उतनी ही अधिक निश्चित हो जाएगी। यही नहीं अपनी ही नहीं किसी की भी सफलता हो उससे हमेशा आनंदित हों। यह पूरी प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क को अत्यंत सक्रिय व उद्बलित कर देती है। मस्तिष्क की कोषिकाएँ हमारे सपने के अनुरूप अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण करने में जुट जाती हैं और तब तक न तो स्वयं चैन से बैठती हैं और न हमें चैन से बैठने देती हैं जब तक कि वो सपना पूरा नहीं हो जाता। बिना किसी सपने के न तो हमारा मस्तिष्क ही सक्रिय होता है और न अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण ही संभव होता है। इसी से जीवन में सपनों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। अपने अंदर सपने देखने की कला उत्पन्न करो। अच्छे सपने देखो व पूरे विश्वास के साथ देखो और जीवन में विश्व में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर कदम रख दो।

-ए.डी.106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, मो.09555622323

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2018 के चित्रों को देखने और डाउनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से <https://www.facebook.com/AjayTankarawala/> पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केंद्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल,
दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,
फोन: 01495-270503, मो. 09416747308

सन्तान निर्माण में माता का सर्वाधिक योगदान

□ मनमोहन कुमार आर्य

जन्म देने वाली सत्ता व शक्ति का नाम माता है। सारा संसार वा मनुष्य अपनी अपनी माताओं से उत्पन्न होते वा जन्म लेते हैं। यदि मां न होती तो संसार में कहीं मनुष्य व अन्य प्राणी जो माताओं से उत्पन्न हुए हैं, दिखाई न देते। यह सृष्टि यदि चल रही है तो उसमें जन्मदात्री मां की भूमिका सर्वापरि अनुभव होती है। मनुष्य की अनेक मातायें होती हैं। ईश्वर भी हमारी माता है। वेदों में ईश्वर को माता कहा गया है। ईश्वर संसार में सभी माताओं की भी माता है। उसी ने इस सृष्टि वा भूमि माता को बनाया है। हमारी यह भूमि माता सूर्य के चक्र लगाती है। इस कारण भूमि को सूर्य की पुत्री कह सकते हैं। वैज्ञानिक लोग भूमि को सूर्य से पृथक हुआ एक हिस्सा ही मानते हैं। इससे भी भूमि सूर्य से उत्पन्न होने से सूर्य की पुत्री कही जा सकती हैं। भूमि माता और हमारी जन्मदात्री माता के समान ही गो माता भी है जो अपने अमृततुल्य दुग्ध व बैल आदि से हमारा पोषण करती है। वैदिक धर्म व संस्कृति में गोपालन को आवश्यक बताया गया है। जो गोपालन करेगा वह गोमाता के शुद्ध दुग्ध को प्राप्त कर सकता है और उस दुग्ध के गुणों से उसका शरीर निरोग व बलिष्ठ बनकर जीवन में सफलतायें व साध्य को प्राप्त कर सकता है। गोदुग्ध से मनुष्य की बुद्धि को भी शक्ति मिलती है। प्राचीन काल से हमारे गुरुकुलों में गोपालन को अनिवार्य रूप से करने और गोमाता के दुग्ध का ही सेवन करने की परम्परा है। योगेश्वर कृष्ण जी का गोपालक होना प्रसिद्ध ही है। उनका तो एक नाम भी गोपाल कहा जाता है। गोदुग्ध वा गोपालन के ही कारण ही हमारे देश में वेद ऋषि उत्पन्न होते थे और हमारा देश विश्व में धर्म व संस्कृति का ज्ञान देने वाला प्रथम व अग्रणीय देश था। वेदों की उत्पत्ति का गौरव भी ईश्वर ने भारत व इसके प्राचीन नाम आर्यावर्त को ही प्रदान किया है। परमात्मा ने ऋषियों को वेदों का ज्ञान जिस स्थान पर प्रदान किया उसका नाम तिब्बत है। सृष्टि के आरम्भ में जिस समय वेदों का ज्ञान दिया गया उस समय सारा संसार एक देश था। वेदों का ज्ञान मिलने के बाद कालान्तर में अतीत व वर्तमान के देश अस्तित्व में आये हैं। गोमाता की ही तरह वेद भी हमारी माता है जो ईश्वर, जीवात्मा, इस सृष्टि व समस्त आचार व्यवहार से हमारा व विश्व के मानवों का परिचय कराती है। यदि वेद न होता तो मनुष्य गूंगा और अज्ञानी होता। वेद और इसके ज्ञान सहित अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न ऋषियों ने ही सृष्टि के सभी मनुष्यों को वेद से भाषा व ज्ञान को प्राप्त करके हमें व संसार को वेद भाषा व वैदिक ज्ञान प्रदान किया है। संसार में वेद माता का महत्व भी निर्विवाद है।

हम मनुष्यों की बात कर रहे हैं। सभी मनुष्यों की एक माता होती है जिसने हमें जन्म दिया है। हम जीवात्मा के रूप में माता के गर्भ में आते हैं और फिर वहां दस मास तक रहकर एक शिशु के रूप में विकसित होकर जन्म लेते हैं। इस दस मास में माता को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। जन्म के बाद भी सन्तान के पालन में माता को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं। एक छोटे से शिशु को सम्भालना आसान काम नहीं है। उसको समय पर दुग्धपान कराना, उसे स्वच्छ रखना, उसे व्यायाम आदि कराना, रोग होने पर उसका घरेलु उपचार करना व उसे किसी वृहद रोग होने पर

योग्य चिकित्सकों से चिकित्सा कराना आदि अनेक प्रकार के कष्ट हमारी माता व पिता मिलकर उठाते हैं। शिशु को स्वास्थ्य विषयक कोई कष्ट न हो इस कारण माता को भी ऐसा भोजन करना पड़ता है जो शिशु के स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक होता है। माता ही शिशु को बोलना सिखाती है। शिशु यदि किसी को सबसे अधिक जानता व पहचानता है तो वह उसकी माता ही होती है। माता समीप हो तो शिशु निश्चिन्त रहता है। यदि मां पास में न हो तो शिशु रोता चिल्लाता है और माता के समीप आने पर ही वह चुप होता है। इस प्रकार माता-पिता के पोषण के कार्यों से शिशु का शरीर वृद्धि को प्राप्त करता रहता है। जब शिशु बड़ा हो जाता है तो उसे विद्यालय वा स्कूल में शिक्षा के लिए भेजा जाता है। लगभग 20 वर्ष तक वह शिक्षा प्राप्त करता है। उसकी शिक्षा पर माता-पिता भारी व्यय करते हैं। इस प्रकार शिशु के पालन पोषण व उसे शिक्षित करने व उनके विवाह आदि कराने में ही माता पिता का जीवन व्यतीत होता है। जब वह शिशु 25-30 वर्ष की अवस्था में अर्थोपार्जन में सक्षम व समर्थ होता है तो माता पिता का वार्धक्य आरम्भ हो जाता है। अभी तक माता-पिता अपनी सन्तानों के सहायक थे। उनकी सेवा, सहायता व पालन पोषण का परिणाम ही स्वस्थ व उन्नत सन्तान होती है। जब सन्तान अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है तो क्या उसका यह कर्तव्य नहीं कि वह अपने माता-पिता की आवश्यकताओं व भावनाओं का ध्यान रखे? आजकल देश का जो वातावरण बना है उसमें कुछ ही सन्तानें अपने कर्तव्य को पूरा करती होंगी? कोई कहे या न कहे परिवार के माता-पिता व वृद्ध जन यह अनुभव करते हैं कि सन्तानों से उन्हें वह सेवा व आदर आदि प्राप्त नहीं होता जो कि उनको मिलना चाहिये। इसका परिणाम यह होता है कि अधिकांश माता-पिता अपने जीवन के सान्ध्यकाल में एकाकी जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होते हैं। कईयों का तो बहुत बुरा हाल होता है जिसमें हम टीवी आदि पर देखते हैं और समाचार पत्रों आदि में आसपास ऐसे दृश्य देखने व सुनने को मिल जाते हैं।

वैदिक धर्म व संस्कृति माता-पिता को सन्तान का प्रथम व द्वितीय देवता बताती है। माता व पिता इस कारण से देव हैं कि वह सन्तान से कुछ लेते नहीं हैं और देते इतना है कि जिसे संसार की कोई सन्तान चाह कर भी चुका नहीं सकती। बाल्मीकि रामायण में राम की मातृ-भक्ति व पितृ भक्ति के दर्शन होते हैं जो कि निःसन्देह वेद की शिक्षाओं का जीवन्त उदाहरण है। रामायण का एक उदाहरण हमें अत्यन्त प्रेरणाप्रद लगता है। इसमें राम अपनी माता से कहते हैं कि यदि पिता मुझे कहें कि जलती आग में कूद जाओ तो राम बिना सोचे विचारे जलती आग में कूद सकता है। विश्व इतिहास में सन्तान विषयक ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा। राम के यह वाक्य पितृ भक्ति का ऐसा आदर्श है कि शायद इससे बढ़कर दूसरा उदाहरण हो ही नहीं सकता। धन्य हैं हमारे पूर्वज व वैदिक संस्कृति। पूरी रामायण ही मातृ व पितृ भक्ति के आदर्श उदाहरणों सहित राम के आदर्श वेदमय जीवन से भरी पड़ी है। जिसने बाल्मीकि रामायण का अध्ययन किया है व उसकी शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण किया है वह मनुष्य धन्य व भाग्यशाली है।

व्यक्तिगत जीवन में यदि देखें तो हम आज जो कुछ भी हैं, उसमें हमारी माता का प्रमुख योगदान व भूमिका है। हमारा शरीर व शिक्षा तो मुख्य रूप से उनकी देन है। उनके द्वारा दिये गये वातावरण में रहकर ही हमने जो सीखा उसी से अपने जीवन की सभी सफलताओं को प्राप्त किया है। आर्यसमाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि कई लोग अपढ़ माता पिताओं के यहां उत्पन्न हुए और उनके त्याग व बलिदान के कारण वह वेद और आर्यसमाज से परिचित होकर ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के यथार्थ स्वरूप को जान सके। उन निर्धन माता-पिताओं की सन्तानों ने प्रभूत यश अर्जित किया। आवश्यकतानुसार धन व अन्य साधन भी उन्हें प्राप्त हुए। उनका जीवन सुखपूर्वक व सन्तोष के साथ व्यतीत हो रहा है। ऐसे मित्रों से यह भी ज्ञात होता है कि जब उनका जन्म हुआ तो माता-पिता अतीव निर्धन थे परन्तु उन्होंने अपनी सभी सन्तानों के पोषण व शिक्षा-दीक्षा में कमी नहीं आने दी। अत्यधिक तप व पुरुषार्थ कर बच्चों का पालन पोषण व शिक्षा प्राप्त कराई। ऐसी मातायें घर व परिवारों में अभावों की स्थिति में महीनों में अनेकानेक बार व्रत रखकर अपनी सन्तानों को भोजन कराती थी और बच्चों की कुचेष्टायें करने पर दण्ड भी देती थी। बाद में जब बच्चे योग्य हुए तो माता-पिता सन्तानों से बिना किसी प्रकार की

सेवा कराये ही परलोक सिधार गये। ईश्वर ने संसार के जो नियम बनाये हैं वह अदभुत हैं और बहुत सी बातें तो समझ में नहीं आती। मनुष्य सोचता है कि काश ऐसा होता, परन्तु जो वह चाहता है, कई बार नहीं हो पाता। इस लेख के माध्यम से हम यही कहना चाहते हैं कि जिन लोगों के माता-पिता जीवित हैं वह उनका अपनी वाणी, व्यवहार, सेवा, भोजन एवं वस्त्र आदि से सेवा करें। बीता हुआ समय वापिस नहीं आता। ऐसा करके उन्हें सुख व सन्तोष प्राप्त होगा। कोई भी सन्तान माता-पिता के ऋण से कभी उच्छ्रान्त नहीं हो सकती। उनकी आत्मा को सन्तुष्ट कर हम उन्हें सुखी करके स्वयं भी सुखी हो सकते हैं। ईश्वर की भी वेदों में यही आज्ञा है। ऋषि-मुनि भी माता, पिता व आचार्यों एवं सभी पात्र लोगों की सेवा व सहायता करने की शिक्षा व आज्ञा करते हैं। हमें वेदों का अध्ययन करना चाहिये और वेद मार्ग पर ही चलना चाहिये। यही मार्ग हमें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की ओर ले जाता है। ऋषि दयानन्द का साहित्य पढ़कर हमें अपने सभी कर्तव्यों का ज्ञान हो सकता है और इहलोक और परलोक को हम सुधार सकते हैं। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

-196 चुकखूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121

हाथ से खाना खाइये

□ श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

कुछ दिन पूर्व हमारे रिश्तेदार हमारे घर रहने आये, मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे हर चीज चम्मच से खाते हैं। दाल बाटी जैसा परम्परागत खाना भी चम्मच से खाना, मुझे कुछ अजीब लगा। आखिर मुझसे रहा नहीं गया और उन्हें हाथ से खाना खाने के कुछ फायदे बताये।

आयुर्वेद के अनुसार हाथों की प्रत्येक अंगुलि पाँच तत्त्वों का विस्तार है-अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल। जब हम हाथ से खाना खाते हैं तो अंगुलि और अंगूठे को मिलाकर खाना खाते हैं जिससे हस्त मुद्रा बनती है, इससे निरोगी काया पाने में मदद मिलती है। भोजन ज्यादा ऊर्जात्मक बन जाता है।

जब चम्मच से खाना खाते हैं तो खाने का तापमान समझ नहीं आता और कभी-कभी जीभ जल जाती है बहुत गरमागरम खाने से। लेकिन जब अपने हाथों से खाते हैं तो अंगुलियाँ भोजन के तापमान को महसूस कर लेती हैं और मस्तिष्क को एक संकेत मिल जाता है फिर मस्तिष्क भोजन को बेहतर ढंग से स्वाद देने में मदद करने के लिए उपयुक्त पाचन रस और एंजाइम को स्रावित करता है। फिर खाना अच्छे से पचता है।

कांटे और छुरी से खाना हमारी सभ्यता का हिस्सा कभी नहीं था। प्राचीनकाल में योगी, मुनि, आम जनता सभी हाथ से खाना खाते थे, जिससे वे स्वस्थ और लम्बे समय तक जीवित रहते थे। आज भी अफ्रीका, मिडल ईस्ट और एशिया के कई इलाकों में खाना हाथ से खाते हैं। खाने के लिए हाथों का उपयोग करना भोजन के साथ-साथ शरीर, मन और आत्मा के साथ भी एक सम्बन्ध जोड़ता है।

कटलरी (कांटा, चम्मच, छुरी आदि) के साथ भोजन महज एक मशीनी क्रिया बन जाती है। कई बार चम्मच से खाते खाते दूसरे हाथ

से मोबाइल फोन के संदेश चैक करने लगते हैं या रिमोट कण्ट्रोल से टी.वी. के चैनल बदलते रहते हैं। परन्तु हाथ से खाना खाते समय ध्यान खाने पर रहता है। ओवर इटिंग नहीं होती, पाचन सही होता है और वजन भी नियन्त्रण में रहता है।

हाथ से खाना खाने और खिलाने में एक भावना भी जुड़ी होती है। हाथ से खाना खाने पर एक अलग की तृप्ति और आनन्द मिलता है। आज भी शादियों में बारात के सुबह के खाने में कढ़ी, खिचड़ी और दाल बाटी बनायी जाती है, जिसे अच्छी तरह घी में मिलाकर खाया और खिलाया जाता है। केरल के लोग दाल, चावल को भी हाथ से खाते हैं और उन्हें उसी में आनन्द आता है।

दादी, नानी या माँ के हाथ से खाया खाना किसे याद नहीं अर्थात् वह सुखद अनुभूति सभी के दिलों में मौजूद है। बस नाखून बड़े न हों, हाथ एकदम साफ धुले हुए हों। हाथ से खाना खाएँ और खिलायें, प्रेम और वात्सल्य भी बढ़ता है।

भोजन में भावना का अधिक महत्त्व होता है।

- 3 C 204, Whispering Palms, Lokhandwala township, Kandivali (E), Mumbai (Mh.)

सुभाषित

उस वाणी से गूँगे ही भले, जो मीठे बोल सुनाये नहीं।
क्या लेना है उन पैरों से, जो सत्संग में चले जाये नहीं।
वे हाथ भला किस काम के हैं, जो दान करें न धर्म के लिए।
उन कानों से क्या मतलब है, जो प्रभु का भजन सुन पायें नहीं।
बस बन्द करो उन आँखों को, जो पाप के भाव मिटाये नहीं।
यह जिस्म राख की ढेरी है, या समझो नौका पत्थर की,
उस मानव से पशु बेहतर है, जो काम धर्म के आये नहीं।

આજે એક એવા વ્યક્તિત્વની વાત કરવી જે જેમના યથા નામ તથા ગુણ હતા. જી હા, વાત કરવી છે શ્રી ઓંકારનાથ માનકટાલાની.

આજના પાકિસ્તાનના લાહોરમાં લાલા રામરતન માનકટાલાને ત્યાં જન્મ. પિતા ઋષિભક્ત અને વ્યવસાયે વકીલ. આર્યસમાજ ઉપર થયેલ કેસમાં બચાવ પક્ષે ઊભા રહેલા. ઓંકારનાથજી સ્વયં ડી. એ. વી. લાહોરમાં ભણેલા. આર્યસમાજના સંસ્કારનો વારસો પિતાશ્રી તરફથી મળ્યો હતો. ભાગલા બાદ મુમ્મઈ આવી ગયા અને ભાઈઓ સાથે મળીને કુમાર મેટલ ઇન્ડસ્ટ્રીજના નામે મશીનરી બનાવવાનો ઉદ્યોગ નાખ્યો. આ ઉપરાંત મુમ્મઈના સહુથી મોટા વેર હાઉસની સ્થાપના પણ કરી. સાથે બીજા પણ અનેક ઉદ્યોગોની સ્થાપના કરી. પ્રારંભમાં મુમ્મઈની માટુંગા આર્યસમાજમાં જોડાયા અને અનેકવિધ રચનાત્મક પ્રવૃત્તિઓ આર્યસમાજમાં આરંભી. જેમાં દયાનન્દ વિદ્યાલય મુખ્ય હતું. માટુંગા આર્યસમાજમાં હતા ત્યારનો એક પ્રસંગ છે.

તેમની ફેક્ટરીમાં એક કારીગર હતો. કામમાં ખૂબ નિપૂણ પણ દારુનો વ્યસની હતો. એક દિવસ ઓંકારનાથજીએ એને બોલાવીને શિખામણ આપી. તો કહે એકલો છું, આગળ-પાછળ કંઈ છે નહીં તો કોના માટે પૈસા બચાવું. એને પુછ્યું તારું લગ્ન કરાવી દઉં તો..... તો કહે પત્નીને લાવીને રાખું ક્યાં..... એની પણ વ્યવસ્થા કરી આપું. કારીગરે દારું ત્યાગવાનું વચન આપ્યું.

દયાનન્દ વિદ્યાલયમાં પાણી પાવા માટે એક બહેન હતા. વિધવા હતા પાછા એકલા પણ. એને પુછાવ્યું કે સારો માણસ મળી જાય તો ઘર સંસાર માંડવાની તૈયારી છે..... રુબરુ મળીને સમજાવી. તો કહે તૈયાર છું. પોતાની ફેક્ટરીના પેલા કારીગર સાથે એના લગ્ન કરાવી આપ્યા. મુમ્મઈના પરામાં એક ચોરડી પણ લઈ આપી. મેં એ કારીગરને જોયો હતા. ખબ ખુશ હતો. સારી ગૃહસ્થી પણ ચાલતી હતી. ૧૯૮૪ પછી મેં મુમ્મઈ છોડ્યું પછી મારી પાસે એની કોઈ જાણકારી નથી પણ માનું છું કે ઓંકારનાથજીની એના પર મીઠી તો સાથે કરડી નજર પણ હતી એટલે આજે એના સંતાનો સાથે આનંદ-મંગલમાં જ હશે.

શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ ટંકારાની સ્થાપના તો શેઠ નાનજી કાલિદાસ મહેતાએ કરી હતી. મંત્રી પદે પં. આનન્દ પ્રિયજીને કાર્યભાર સોંપ્યો હતો. પ્રધાનપદે સર્વોચ્ચ ન્યાયાલયના મુખ્ય ન્યાયાધીશ મહેરચંદ મહાજન ચુંટાયા હતા. મહાજનજીએ મુમ્મઈના આર્યોની એક સભા બોલાવીને ટંકારા માટે સહયોગ માંગ્યો હતો. કેટલાક ઋષિભક્તો આગળ આવ્યા હતા. તેમાંથી ચાર જણાને ટંકારાના ટ્રસ્ટી માટે પસંદ કર્યા હતા જેમાંથી એક ઓંકારનાથજી હતા.

ઓંકારનાથજીએ પોતાનું રહેઠાણ બદલ્યું અને મુમ્મઈના વાન્દ્રામાં રહેવા આવી ગયા. અહીં સાંતાકુજ આર્યસમાજમાં જોડાયા. સાથે સાથે ટંકારાની ગતિવિધિઓના ગતિ આપવા માટે સક્રિય પણ બન્યા.

સાંતાકુજ આર્યસમાજના એક સદસ્ય હતા. એકાંકી હતા. રહેઠાણ તો મુમ્મઈના તારદેવમાં હતું. ખાખી ચક્રી અને અડધીબાંચનું ખાખી શર્ટ. પોલિસ વિભાગમાં પહેરાતો હોય એવો યુનિકોર્મ હતો. હાથમાં એક નાનકડી પેટી રાખતા જેના પર લખેલ હતું કે તંબાકુ છુડાનેવાલા ડૉક્ટર. મોટેભાગે ટ્રેનમાં જ ફરે અને કોઈ ધુમ્રપાન કરતું કે તમાકુ ખાતું દેખાય તો એને પ્રમથી, દાખલા દલીલો સાથે વ્યસનનો ત્યાગ કરવા સમજાવે. મિશનરીનું જીવન હતું. ઉંમરને કારણે એમને આંખોમાં તકલીફ થઈ. જાતે જ એક દવાખાનામાં દાખલ થઈ ગયા.

એ દિવસોમાં ઓંકારનાથજી ટંકારા ટ્રસ્ટના મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી બની ગયા હતા. ટંકારાના કામમાં સહાય માટે મને રાખ્યો હતો. ટંકારાના કામની સાથે સાથે તેઓ આર્યસમાજમાં જ્યાં જ્યાં સક્રિય હતા ત્યાંના કામ પણ એમના તરફથી હું જોતો હતો. એમની ઓફિસમાં મને એક ટેબલ આપ્યું હતું. મને જ્યારે સમય મળે ત્યારે હું એમને ત્યાં જતો હતો. એક દિવસ મને બોલાવીને કહે કે તંબાકુ છોડવવાવાળા મિશનરીને તો તું ઓળખે છે ને. મેં કહ્યું કે હા, તો કહે કે ઓફિસના કેશિયર પાસેથી પૈસા લઈને હોસ્પિટલમાં જા, જ્યાં એમને દાખલ કર્યા છે. ત્યાં એમના નામે પૈસા ભરી દે. મેં કહ્યું ભલે, હું તેમને મળતો પણ આવીશ. તો મને કહે કે તું મળવા ન જતો, નહીં તો એ સમજી જશે કે હોસ્પિટલનું બીલ મેં ભર્યું છે. એમને આ વાતની ખબર ન પડવી જોઈએ.

ટંકારા ટ્રસ્ટની આર્થિક સ્થિતિ હજુ સ્થિર નહોતી થઈ. અનેક કારણો હતા. આચાર્યજીનો પત્ર આવે કે પૈસા મોકલો. બેંકમાં પુરતા પૈસા હોય નહીં. તેઓ પોતે દર મહીને પોતાના તરફથી સો રૂપિયા ટ્રસ્ટમાં આપતા, ઉપરાંત તેમના એક વ્યવસાયિક મિત્ર પાસેથી પણ દર મહીને સો રૂપિયાનો ફાળો લેતા. એમના જ એક મિત્ર અને ટંકારાના જ ટ્રસ્ટી સ્વ. યોગેન્દ્રપાલ નાગરથ પાસેથી પણ માસિક પચાસ રૂપિયાનો ફાળો લેતા. તેમ છતાં જરૂર પડે પોતાના તરફથી જ વધારાના રૂપિયા આપીને ટ્રસ્ટનું કામ અટકે નહીં તેનું ધ્યાન રાખતા. આ બધો વ્યવહાર હું કરતો એટલે પ્રત્યક્ષ સાક્ષી છું.

મને તો એમણે પુત્રની જેમ સાચવ્યો હતો. એક પ્રસંગ યાદ આવતા આજે પણ આંખો ભીની થઈ જાય છે. ૧૯૮૪માં મુમ્મઈ છોડીને અમદાવાદ આવી ગયો હતો. અમદાવાદની આર્યસમાજમાં પુરોહીત પદે સેવા આપતો હતો. પણ અવારનવાર ક્ષોન કરીને મારા સમાચાર પુછતા હતા. પછી તો એમના જ આગ્રહ અને પ્રયત્નોને કારણે પૂર્વ આફ્રિકાના દારેસલામની આર્યસમાજમાં જોડાયો. એમના મોટા પુત્ર સુધીરભાઈને પોતાના વ્યવસાયને કારણે વાંરવાર દારેસલામ આવવાનું થતું. દારેસલામ એરપોર્ટ પર ઉતરીને સામાન હોટેલમાં મુકીને સુધીરભાઈ સીધા આર્યસમાજમાં મને મળવા આવતા, આગ્રહ કરવા છતાં કોઈ દિવસ ચહા-પાણી પણ પીતા નહીં. હું પુછતો કે તો પછી મારી પાસે શા માટે આવો છો તો જવાબ મળતો.... ખબર છે... મુમ્મઈ પાછો જાઉં તો પિતાશ્રીનો પહેલો સવાલ હોય..... રમેશને મળ્યો..... કેમ ચાલે છે એનું.....

છેલ્લે ધરતીકંપ આવ્યો તે વર્ષે હું આફ્રિકાથી રજા પર આવ્યો હતો. રજાઓ પુરી થતા પાછો જ્યાં મુમ્મઈ આવ્યો હતો. સાંતાકુજ આર્યસમાજમાં ઉતર્યો હતો. સવારે હવનમાં બેઠો, ઓંકારનાથજી તો દરરોજ હવનમાં આવતા. મારે વિમાનનો ટાઈમ થતા ટેકરી બોલાવી, સામાન મુકીને ઓંકારનાથજીને મળ્યો અને કહ્યું કે જાઉં છું, તો આર્યસમાજના દરવાજા સુધી વળાવવા આવ્યા. મારા હાથમાં વિદાયના શુકન તરીકે સો રૂપિયા આપ્યા અને રડી પડ્યા. હું અગિયાર વર્ષનો હતો ત્યારે પિતાની છત્રછાયા ગુમાવી હતી. પિતાનો સ્નેહ તો અનુભવ્યો નહોતો. પણ આજે પણ એ પ્રસંગ યાદ કરીને મારી આંખો ભીની થઈ જાય છે, કહેવું પડે છે કે ઓંકારનાથજી મારા ધર્મપિતા હતા.

એમના સુપુત્ર શ્રી સુનીલ માનકટાલા આજે ટંકારાના સક્રિય ટ્રસ્ટી છે. ઋષિજન્મભૂમિ ઉપરાંત બીજી આર્યસંસ્થાઓમાં તન-મન-ધનથી સક્રિય રહી રચનાત્મક ફાળો આપે છે. ઓંકારનાથજીને મારી શ્રદ્ધાંજલી

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)

एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल

प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-ब्रह्मचारी शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2018 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।) प्रवेश से पूर्व परीक्षा ली जायेगी। उत्तीर्ण ब्रह्मचारी ही प्रवेश के योग्य माने जायेंगे। कम्प्यूटर शिक्षा का भी प्रबन्ध।

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम के अनुसार दसवी कक्षा तक साइंस और गणित पढ़ाने में योग्यता प्राप्त हो। □ शास्त्री वर्ग के छात्रों को काशिका, नामिक, अष्टाध्यायी आदि पढ़ा सके। अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतनमान योग्यतानुसार। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण, चित्र एवम् आधार कार्ड सहित आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ-गुजरात) का "64वां वार्षिक अधिवेशन" बड़े हर्षोल्लास से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। गाँधीधाम के मध्य में झंडा चौक में आयोजित तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः बहन नन्दिता शास्त्री जी (पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी) के ब्रह्मत्व में "आत्मकल्याण महायज्ञ" हुआ जिसमें स्थानीय व भारतभर से पधारे हुए 151 यजमानों ने यज्ञलाभ लिया। यज्ञ के दौरान नन्दिता शास्त्री जी ने यज्ञ का महत्व समझाया व यज्ञ करने से जीवन में होने वाले शारीरिक, मानसिक व आत्मिक लाभ के बारे में विस्तृत विवरण दिया। कार्यक्रम में गुजरात के विविध क्षेत्रों व राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व महाराष्ट्र और अमेरिका से सैकड़ों प्रतिनिधि पधारे। आर्यसमाज गाँधीधाम द्वारा संचालित जीवनप्रभात (निराधार बालकों का आश्रयस्थान) के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें देशभक्ति के गीत, विविध प्रेरणात्मक प्रसंग, भारतीय संस्कृति की महत्ता दर्शाते प्रसंग इत्यादि मुख्य रहे। बच्चों के कार्यक्रम की सभी ने प्रशंसा की व पुरस्कार भी दिये। कार्यक्रम के अंत में आर्यसमाज के प्रधान वाचोनिधि आचार्य ने सभी पदाधिकारीओं, स्टाफ, दानदाताओं, विद्वत जनों, कार्यकर्ताओं और व्यवस्था में सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

श्रद्धांजलि सभा

स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटू सिंह आर्य संस्थापक प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की ग्यारहवीं पुण्यतिथि एवं श्रीमती शारदा देवी की पंचम पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में श्रद्धांजलि सभा प्रारम्भ हुई। जिसकी अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की। इस के उपरान्त शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर द्वारा "अष्टम् सम्मान समारोह" में श्री सत्यव्रत सामवेदी, जयपुर को "कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ" की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती कमला शर्मा ने अभिनन्दन पत्र वाचन किया और स्मृति चिन्ह एवम् शॉल ओढ़ाकर 11 हजार रूपये भेंट स्वरूप प्रदान किये। आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित संस्थाओं में से चयनित सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका श्रीमती अंजु माथुर को शॉल ओढ़ाकर 3100/- रूपये से सम्मानित किया गया और जरूरतमन्द प्रतिभाशाली छात्राओं को पं. विद्यावाचस्पति मैमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा पुरूस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने "आर्य कन्या संस्था" द्वारा अलवर को यज्ञमय बना देने की बात कही और आर्य समाज के साथ जुड़े अपने संस्मरणों को श्रोताओं के साथ साझा किया।

प्रवेश प्रारम्भ

नोट:- **कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी)** हाथरस में प्रवेश योग्यता परीक्षा के आधार पर लिया जायेगा।

(1) प्रवेश कक्षा शिशु (नर्सरी) से कक्षा नवीं तक किसी भी कक्षा में लिया जा सकता है। (2) कक्षा 11वीं और 13वीं (उत्तरमध्यमा, विद्याविनोद, शास्त्री, विद्यालंकार) कक्षा में भी प्रवेश लिया जा सकता है। (3) प्रवेश के समय छात्र के पासपोर्ट साइज 3 रंगीन फोटो तथा छात्र से मिलने वाले किन्हीं चार व्यक्तियों के पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो, अंक तालिका, काउण्टर साइन, टी.सी., पहचान पत्र, आधार कार्ड साथ लेकर आये। (4) मान्यता- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। (5) नवीं से बारहवीं कक्षा तक गुरुकुल कांगड़ी के पाठ्यक्रम में (N.C.E.R.T) का पाठ्यक्रम संचालित है। (6) नवीं से बारहवीं कक्षा तक कला वर्ग के साथ-साथ विज्ञान वर्ग का भी पाठ्यक्रम संचालित है। (7) अतिरिक्त प्रशिक्षण:- (क) संगीत (गायन, वादन, तबला) में प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की परीक्षाएँ (जूनियर डिप्लोमा से लेकर प्रभाकर तक) संचालित हैं। (ख) खेलकुद तथा शारीरिक प्रशिक्षण जूडो-कराटे, बैडमिंटन, खो-खो। (ग) योग प्रशिक्षण। (8) व्यावसायिक प्रशिक्षण:- कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र (आई.टी.आई) में कोपा एवं स्विंग टेक्नोलॉजी का एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम है कन्या गुरुकुल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्यता प्राप्त है। कन्या गुरुकुल अलीगढ़, आगरा मार्ग पर सासनी-हाथरस के मध्य स्थित है। सम्पर्क सूत्र:- 09258040119, 08006340583, 09458480781, 09927991922, 07830289379, ईमेल- kanyagurukulmhv.hathras@gmail.com & kgpiti2007@gmail.com, osclkbv&kanyagurukul.in

आपको जानकर अपार हर्ष होगा कि **गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुकताल, जिला-मुजफ्फरनगर-251316, उत्तर प्रदेश** पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियाएं करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है। नये सत्र के प्रवेश 01 अप्रैल 2018 से आरम्भ हो रहे हैं। यहां पर मध्यमा स्तर (इण्टरमीडिएट) की परीक्षाएं 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी' द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहां के स्नातक शिक्षक, पुरोहित तथा सैन्य, पुलिस पी.ए.सी., वन विभाग, लोक सेवा आयोग आदि विभागों में कार्यरत हैं यहां पर छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष दिया जाता है।

कृप्या अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाषा पर वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय के 2 रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क तथा संस्कृत संस्थापक के मानदेय पर तीन संस्कृत अध्यापक व दो आधुनिक विषय के अध्यापकों की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

स्वामी आनन्दवेश, बलदेव नैष्ठिक, प्रबन्धक, मो. 9997437990
प्रेमशंकर मिश्र, प्रधानाचार्य

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी का अभिनन्दन

आर्यसमाज-जामनगर, गुजरात के मानद मन्त्री, जामनगर शहर के पूर्व मेयर, गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सौराष्ट्र जोन के मन्त्री, श्री ब्रह्म सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रमुख, इन्डियन रेडक्रॉस सोसाइटी जामनगर ब्रांच के ऐक्जीक्यूटिव कमिटी मेम्बर और भारतीय जनता पार्टी के पूर्व शहर उपप्रमुख, टंकारा रत्न श्री डॉ. अविनाशभाई भट्ट का श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी के रूप में सर्वामतानुसार चयन किया गया है।



आर्यसमाज-जामनगर के पदाधिकारियों, सदस्यों श्रीमद् दयानन्द कन्या विद्यालय-जामनगर के प्राथमिक विभाग, माध्यमिक विभाग उच्चतर माध्यमिक विभाग के आचार्या श्रीओ और समग्र स्टाफ ने गौरव और हर्ष का अनुभव करते हुए, श्री डॉ. अविनाशभाई भट्ट को हार्दिक अभिनन्दन दिया।

शोभायात्रा के गीत शीर्षक ग्रन्थ का लोकार्पण

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्णजयन्ती महोत्सव के अवसर पर 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की 'शोभायात्रा के गीत' नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस पुस्तक में प्रभातफेरी, शोभायात्रा, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्यसमाज के स्थापना दिवस आदि पावन अवसरों पर गाये जाने वाले प्रेरक एवं आत्मोत्कर्ष परक गीतों का अनूठा संग्रह है। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व, शिक्षा की आवश्यकता और वर्तमान समय में गुरुकुलों के विस्तार पर बल दिया।

मंचस्थ गणमान्य विद्वानों ने 'शोभा यात्रा के गीत' शीर्षक पुस्तक के संकलन कर्ता एवं सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को इस उत्तम कृति के लिए बधाई दी।



इन्साफ जुल्म को खा जाता है
धमण्ड ज्ञान को खा जाता है।



रास्ता चलना स्वच्छ, चाहे फेर हो
काम करना उत्तम, चाहे देर हो।



39वां वार्षिकोत्सव एवं भवन उद्घाटन समारोह

आर्य समाज मन्दिर, जहाँगीरपुरी, नई दिल्ली का 39वां वार्षिकोत्सव समारोह रविवार 11 मार्च 2018 को श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ और भवन का उद्घाटन महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के कर कमलों द्वारा किया गया। 21 कुण्डीय विश्वशान्ति महायज्ञ की पूर्णाहुति आचार्य प्रेमपाल, अध्यक्ष आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ तदुपरान्त श्री सुमन आर्य के सारगर्भित भजन प्रस्तुत किये गये। श्री सुरेन्द्र खर्ब, निगम पार्षद, भलस्वा जहाँगीरपुरी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर आर्य हंसराज माडल स्कूल, राममूर्ति देवी आर्या पब्लिक स्कूल एवं न्यू माटेसार स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई।

ध्यान योग कार्यशाला का आयोजन

आज के भौतिक विषैले वातावरण से प्रभावित तनाव व समस्त दुःखों से निवृत्ति, अपने कार्य क्षेत्र में संतुष्टि, उन्नति, सफलता, पारिवारिक रिश्तों में संतुलन एवं मधुरता, जीवन में सफलता पुरुषार्थ/भाग्य का समन्वय, जीवन में स्थिर सुख शान्ति प्राप्त करने हेतु दिल्ली में प्रथम बार विश्व विख्यात वेदों के ज्ञाता आचार्य आशीष जी, दर्शनार्थ, तपोवन देहरादून के सानिध्य में मनोवैज्ञानिक एवं सरल पद्धति द्वारा सरल योग कार्यशाला/भाषण का आयोजन हिन्दी/अंग्रेजी में 4 अप्रैल से 8 अप्रैल 2018 तक आर्य समाज मन्दिर, एफ-5, अशोक विहार-1, निकट मेट्रो स्टेशन केशवपुरम, दिल्ली-110052 में किया जा रहा है। इच्छुक अभ्यार्थी अपना रजिस्ट्रेशन मो. न. 9718965775, 9891610320, 9811122320 एवं दूरभाष नम्बर 011-27221468 पर सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवम् श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाजों, समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं व अलवर के प्रबुद्ध नागरिकों के सहयोग से आर्य समाज के संस्थापक, नारी उद्धारक एवं वेद प्रचारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 194वां जन्म दिवस को अत्यन्त धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 8:30 बजे भव्य यज्ञशाला में यज्ञ एवं हवन से हुआ। इस अवसर पर शोभा यात्रा में विद्यालयी बेंड तथा पांच घोड़ों पर सवार प्राचीन भारतीय गौरव की प्रतीक झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, हाडारानी, अहिल्या बाई होल्कर तथा विदुषी गार्गी चल रही थी।



केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के तत्वावधान में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती सरस्वती जी का जन्मोत्सव व बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य महासम्मेलन वरिष्ठ एडवोकेट श्री सुदर्शन कपूर जी की अध्यक्षता में आर्य समाज शक्ति नगर के प्रांगण में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के ब्रह्म प्रो. विनय विद्यालंकार जी और दयानन्द मठ दीना नगर से पधारें ब्रह्मचारियों ने करवाया। श्री इंदपाल आर्य गौरव तलवाई तथा स्थानीय डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्राओं प्रभु भक्ति तथा ऋषि महिला के भजनों का गुणगान कर सभी का मन मोह लिया।

टंकारा समाचार फरवरी 2018 अंक में लेख “वेदों में ज्ञान-काण्ड” शीर्षक लेख सीताराम गुप्ता जी के नाम से प्रकाशित हुआ वह लेख सीताराम गुप्ता जी का लेख नहीं है, हुई गलती का हमें खेद है।
-सम्पादक

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है, वैसे ही राजा को भी चाहिए कि प्रजा को अपनी न्याय-व्यवस्था से सुख देवे। - महर्षि दयानन्द, यजु., भावार्थ 7.39

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

बच्चों के निर्माण में उपेक्षा घातक है

□ स्वर्गीय पं. राजवीर शास्त्री

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि-बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा दें, जिससे सन्तान सभ्य और किसी प्रकार से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सकें, वैसा उपाय करे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे, तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे मान्य पिता-माता राजा, विद्वान आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न होके सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।” (स.प्र. द्वितीय समुल्लास)

बालक न केवल अपने ही वंश का दीपक होता है प्रत्युत राष्ट्र की भी सम्पत्ति होता है। जिस प्रकार राष्ट्र को सुसमृद्ध बनाने के लिए हम सब प्रकार के प्रयत्न करते हैं और सुरक्षा भी करते हैं। बालक के निर्माण में प्रथम गुरु माता होती है। आचार्य चाणक्य लिखते हैं-**लालयेत् पञ्च वर्षाणि** अर्थात् पाँच वर्ष तक बच्चे का लालन पालन माता किया करे। प्रत्येक घर की शान घर में खेलते कूदते बच्चे ही होते हैं। किसी कार्यवश बच्चे घर से बाहर चले जायें, तब घर-घर नहीं, प्रत्युत अरण्य सा लगता है अथवा किसी कारणवश संतान का अभाव रहता है। तब माता-पिता परेशान रहते हैं। सन्तान न होना, होकर भी मूर्ख रहना, अथवा दुर्जन हो जाना गृहस्थ का महान् दुःख होता है। संस्कृत के एक नीतिकार ने लिखा है-**अजात मृत-मूर्खेषु वरमाद्यौ न चान्तिमः। सकृत क्लेशायैवाद्यौ मूर्खस्तु पदेःपदे।।**

अर्थात् संतान न होना मर जाना, इससे कुछ काल के लिए ही दुःख होता है, परन्तु मूर्ख रहना या असभ्य रह जाना जीवन भर क्लेश देने वाले होते हैं। इसीलिए हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षियों ने इन दुःखों से बचने के लिए हमें बहुत पहले ही सचेत किया था।

माता की शिक्षा का समय बालक के प्रथम पाँच वर्ष होते हैं। यद्यपि शिक्षा का समय गर्भस्थ शिशु भी होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बालक अभिमन्यु पर गर्भस्थावस्था में ही चक्रव्यूह-भेदन के संस्कार पड़े थे। परन्तु यह बहुत तीव्र संस्कार वालों की बात हो सकती है। बच्चा जैसे ही बोलने लगता है, तब उसकी जिज्ञासावृत्ति प्रबुद्ध होती है जिस दशा को माता ही समझती है और उसे समझाती है। बच्चे की तोतली भाषा के भावों को भी समझकर उसका मार्गदर्शन करती है। महर्षि यद्यपि बाल ब्रह्मचारी थे किन्तु ग्रन्थों में लिखी बातें बहुत ही अलौकिक तथा मार्गदर्शन करती हैं।

कन्याओं को शिक्षित करने के लिए महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने कितना प्रयास किया, वह बहुत ही श्लाघनीय व स्तुत्य है। क्योंकि सुशिक्षित माता ही सन्तान को सुशिक्षित बना सकती है। आज का समय बदल रहा है। आर्थिक समस्या दिन-प्रतिदिन विकराल बनती जा रही है। पुरुषों के साथ माताओं को भी नौकरी करनी पड़ती है। दोनों के सेवा करते हुए बच्चों की देखभाल करने का किसी को समय ही नहीं। अपने दुधमुँहे बच्चों को नौकरों या धाय आदि के सहारे छोड़कर सेवा पर चले जाते हैं, जिससे दोनों मिलकर गृहस्थ के भार का वहन कर सकें।

इन बच्चों के जिज्ञासा भाव को कौन शांत करे, यह भगवान्-भरोसे से ही रहता है। बच्चों का जो प्रथम विद्यालय होता है, वह नौकरों पर छोड़ देना कहाँ तक बुद्धि संगत होता है, यह सब अज्ञात

अवस्था में ही बीतता है। यह काल ही बच्चों के निर्माण अथवा सीखने का होता है। बच्चों को यह समय नौकरो अथवा धारो के पास ही बिताना पड़ता है। जो समय माता के सान्निध्य में रहकर सद्गुणों को सीखने में बीतता है। फिर बच्चों का निर्माण कैसे सम्भव है। यह समय सद्गुणों व पारिवारिक व्यवहारों से वंचित हो जाता है, ऐसे बच्चे भविष्य में सभ्य तथा अच्छे नागरिक बन जायेंगे, ऐसी आशा करना दुराशामात्र ही होगी। इस अवस्था में जिज्ञासा के अतिरिक्त ग्रहण करने की शक्ति भी अत्युग्र होती है, बच्चा जिस वातावरण में रहता है, उनकी भाषा को भी बिना सिखायें ही सीख जाता है। जिस भाषा को स्कूल विद्यालयों व महाविद्यालयों में क्रमशः चढ़ते हुए भी बच्चे पूर्ण अधिकार नहीं कर पाते, बच्चे उस भाषा में एम.ए. तक पढ़कर भी पूर्ण से अधिकार नहीं बोल सकते, जैसा अधिकार बच्चे का मातृभाषा पर होता है। यद्यपि बच्चों को विद्यालय की भाँति कोई सिखाता नहीं, किन्तु बच्चा दो-तीन वर्ष की अवस्था में ही अपनी मातृभाषा को सीख जाता है। जिसमें लिंग, वचन की किसी भी प्रकार त्रुटि नहीं करता है, इससे बच्चे की ग्रहण शक्ति का अनुमान आप कर सकते हैं। यही अमूल्य समय माता-पिता से दूर नौकरों व धायों के सान्निध्य में बच्चे बितावें, यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। छोटे-छोटे बच्चे एक मिट्टी के कच्चे घड़े के समान होते हैं। जैसे आप कच्चे घड़े को जैसा बनाना, मोड़ना चाहते हैं, वह वैसा ही बन जाता है। कच्चे घड़े पर जैसा रंग-रोगन व बेल-बूटे आदि बना देते हैं, अग्नि में पकने पर वे वैसे ही बने रहते हैं। इसी प्रकार जब कोई पौधा छोटा होता है, उसमें अपरिपक्व तनों को आप मोड़ सकते हो, परन्तु सूखने पर उसका मुड़ना सम्भव नहीं, वह टूट जायेगी, किन्तु मुड़गी नहीं। बच्चों का यह काल कच्चे व पौधों की भाँति ही होता है। इस काल को व्यर्थ यापन करना या करने देना बच्चों के भाग्य से खिलवाड़ ही करना है।

बच्चों को अच्छे संस्कार भी माता-पिता व गुरुजनों से ही मिलते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का भी अभाव होता जा रहा है। आज हमारे बच्चे विदेशी संस्कारों का सीखते जा रहे हैं। परिवार के गुणों का अभाव दिखाई देता है, इसमें भी माता का शिक्षा न देना ही कारण है हमारे बच्चे-माता-पिता न सीखकर डैडी-मम्मी, अंकल-आंटी आदि सीख रहे हैं। कोई बाहर से आने वाला यदि घर आकर पूछने लगे-“बच्चे तुम्हारी माता जी घर में हैं, या नहीं, तो बच्चे उत्तर देते हैं आप मम्मी से पूछ लो मुझे नहीं पता।” यह अवस्था है भारतीय बच्चों की, उनसे आशा करना कि वे भारत माता के प्रति श्रद्धा का स्नेह रखेंगे, अपने माता-पिता का कैसे आदर करेंगे और भविष्य में माता-पिता की बात भी कैसे सुन पायेंगे। अतः अपने तथा पारिवारिक जनों को सुखमय तथा राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करने के लिए हमें सजग होकर ही बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमारे क्रान्तिकारी महर्षि ने जो संदेश दिया है, उसकी उपेक्षा करने से हमारा भविष्य अन्धकारमय बनता जा रहा है। क्या भारतीय संस्कृति पर श्रद्धा रखने वाले भारतीय आर्य बन्धु उपर्युक्त महर्षि के लेख पर ध्यान देंगे। भौतिक-धन की अपेक्षा अपने राष्ट्र की धरोहर को सुरक्षित रख पायेंगे। आओ मिलकर अपने इस बालिकाओं-बालकों की धरोहर को समय रहते संभाल लें।

(पृष्ठ 01 का शेष)

है। यही उन देवताओं का सत्कार है, यही उनकी पूजा है।

अग्नि में समर्पित पदार्थ आकाश मण्डल में पहुँचकर मेघ बनकर वर्षा में सहायक होते हैं। वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की तुष्टि-पुष्टि होती है। इस प्रकार जो अग्निहोत्र करता है, वह मानो प्रजा का पालन करता है।

परमात्मा ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है परन्तु क्या मनुष्य ने भी परमात्मा को यज्ञ को द्वारा कुछ दिया है? परमात्मा स्वयं वेद में कहता है-

देहि में ददामि ते। तुम मुझे दो, मैं तुम्हें देता हूँ।

अतः यज्ञ करते हुए बड़े प्रेम से वेदमन्त्र बोल कर आहुति दो जिससे मन, शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जाए। प्रदूषण समाप्त हो जाय। जनता खुशहाल हो। विश्व का कल्याण हो।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान् यज्ञ से।
करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव।
डालो शुद्ध पदार्थ यज्ञ में खाते हैं अग्निदेव।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते हैं अग्निदेव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते अग्निदेव।
बदले में एक को अनेक दे जाते अग्निदेव।
पैदा अनाज होता है भगवान्-यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।

- 4-ई, कैलाश नगर, फाजिल्का, पंजाब, मो.9463428299

ध्यान योग द्वारा मोक्ष प्राप्ति

□ सुरेन्द्र

भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन मानी जाती है। जो काल गणना के अन्तर्गत 19608553115 वर्ष है। चीन जो आज पाकिस्तान का साथ देकर हम पर वार कर रहा है, उसकी सभ्यता 6002311 वर्ष है। हमारी वेद संस्कृति ही मानव जीवन को सबसे श्रेष्ठ उत्तम, सूक्ष्म समीक्षा करती है। कारण है वैदिक संस्कृति की नींव शक्ति है योग साधना, जिसका, विस्तृत प्रचार हमारे प्रधान मन्त्री श्री मोदी ने विश्व भर में डंका बजा दिया। योग कर्मणु कौशलम्-अर्थात् हम कर्मशील होकर बसुन्धरा जीवन व्यतीत करें। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य तेजस्वी जीवन व्यतीत करके अपने तेजस्वी वीर्य बल को तरु में रखकर ब्रह्म को प्राप्त किया। मरते समय उनके शब्दों को हम भूल नहीं सकते। "तुम्हारा शरीर तुम को अर्पित। मानव जीवन केवल इस योग शक्ति से दयानन्द होकर अपने बोधिक बल से मोक्ष पथ तक पहुँचाता है। यही सत्संग में हम प्राण करते हुए प्रार्थना करते हैं कि सत्य पर चलकर धर्म का सतत पालन करे, "भद्र भद्रं आभर"-हे ईश्वर हमें निरन्तर कल्याण प्रदान कीजिए। शुद्ध आचरण धारण करें, सत पर अटल रहकर प्रकृति को अपना धर्म स्वीकार करते हुए प्रकृति के उन द्रव्यों को अपनायें जो हमारे शरीर को पुष्ट, दीर्घ आयु और पवित्र मार्ग देकर उत्तम पुरुष को सिद्ध करें। जिन्होंने इस पथ को ग्रहण किया वही ही संसार में उत्तम पुरुष कहे गये और आज उनकी अमर आत्मा को झुक कर नमन करते हैं। पतंजलि ऋषि ने योग साधनों को अमर कर दिखाया है। उनकी प्रेरणा स्वामी रामदेव ग्रहण करके योग मार्ग को स्थान पर फैला दिया। हमारी योग शक्ति के बारे में यह शब्द कहते हुए कहा है, स्वर्गीय विवेकानन्द जी ने हमारी प्राचीन संस्कृति को अनादि काल से होने को कहकर विचारा है कि भारतीय योगिक संस्कृति तो मानव के उत्पन्न होने से पहले जो वेदों की ईश्वर कृत है और मानव ने नहीं बनाई। यह वेद तो तुच्छ मनुष्यता को पृथ्वी से ऊपर उठाकर प्रभु की साकार शक्ति से योग ध्यानस्थ द्वारा प्रकाशमय करता है। यह योग ध्यान साधना को अध्यात्मिक बहूमूल्य हीरे की चमक की तरह प्रभु भक्ति द्वारा दर्शन कराती है। अस्तु इस शक्ति को कभी मानव से दूर नहीं करना चाहिए। हमें अपने राष्ट्र को सुरक्षित रखना चाहिए जो शक्तियाँ आज हिंसक, पथ पर चल कर भारत को हानि करके हमारे वीर शुद्ध आत्मा फौजी, सिपाहियों को मारकर समझती हैं कि हम कश्मीर में विद्रोह पैदा करके कश्मीर भारत के हाथों से छीन लेंगे। वह भूल जायें कि भारत की शक्ति जो एटम शक्ति से ऊपर है वह है योग शक्ति जो राज्य पथ द्वारा हानि करने वाली शक्तियों को मार्ग से हटाकर स्वयं नष्ट कर देंगी, मेरे इस छोटे से लेख में आर्य तथा जो दूसरे समझाये, अलग धर्म को मानने वाले हैं उनसे अनुरोध है जहाँ जन्में और रह रहे हो उसे अपना राष्ट्र मानों बाहरी ताकतों का विरोध करो, नहीं तो आप स्वयं शान्ति से न रहकर स्वयं नष्ट हो जाओगे। प्रधान मन्त्री जी की योग साधना को अपना कर कहो यह देश हमारा है हम इसे नष्ट नहीं होने देंगे। आर्य समाज भी इस लक्ष्य को अपनाये।

प्राण बसे हैं-ऋषि जन्मभूमि में

हुई ईश कृपा यह शुभ दिन है आया।

आज आसमां से इक सितारा ऋषि भूमि में जगमगाया।

उसका जन्म दिन भी इक ऐसा रंग है लाया।

श्री ओंकार नाथ महिला सिलाई केन्द्र कैसा है चमचमाया।

इनकी छत्र छाया में बेटियों के जीवन सुधर रहे हैं,
और हर गांव में लड़कियों के द्वारा नये-नये काम हो रहे हैं।

हंसा (अध्यापिका) भी बड़ी लगन से काम कर रही है।

हर नये ढंग के पिकअप कर वह आगे बढ़ रही है

इस खिलखिलाते बाग के सीचने वाले

बहन शिवराज और सुनील का तो कहना ही क्या

उन्हें जब-जब कुछ भी कहा वह कार्य उसी समय हो गया।

मैनेज कर रहे अजय टंकारा वाले की तो करूँ बात ही क्या,

प्राण हैं उनकी ऋषि भूमि ध्यान रखते हैं छोटी से छोटी बात का।

हमारे आचार्य रामदेव जी को तो इंकार करना आता ही नहीं,
हर समय उनको हंसते देखा कोई गम उन्हें दुःख पहुँचाता ही नहीं।

गुरुकुल के विद्यार्थी जी जान है इस सिलाई केन्द्र के।

हर काम वह हंसकर सीखते रहे, और करते रहे।

कैसे भूलों में अपने प्रेरणा स्रोत भाई रामनाथ को।

जिनकी वजह से यह हौसला और शक्ति मिली है मुझको।
प्राण बसते हैं मेरे भी इस ऋषि भूमि के सिलाई केन्द्र में।
आयु मेरी देखकर, प्रभु बहन उर्मिला को प्रेरणा देता रहे
ईश्वर से यही प्रार्थना है, कि यह सिलसिला सदा चलता रहे।

अन्त में उस पवित्र आत्मा को शत-शत नमन करती हूँ,
उनकी सुगन्ध सदा फैलती रहे ईश्वर से यही दूआ करती हूँ।

शत-शत नमन-शत-शत नमन-शत-शत नमन।

- श्रीमती राज लुथरा (टंकारा श्री) मो. 07290955303

(पृष्ठ 02 का शेष)

रात्रि बैकुंठपुर पे ठहरे। 22 फरवरी को प्रातः कछौड़ के लिए प्रस्थान किया जहाँ कछौड़ स्कूल में तीन स्कूलों की बैठक हुई। उसी दिन सायंकाल चिरमिरी स्कूल में भी मीटिंग रखी गई थी। रात्रि पुनः वाहन से अम्बिकापुर के लिए प्रस्थान किया। दुर्ग भिलाई होते हुए 23 फरवरी रात्रि को रायपुर से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली के लिए उड़ान द्वारा वापस आए।

इन्हीं दिनों हमें जिला कोरिया, बैकुंठपुर (छत्तीसगढ़) के कलेक्टर श्री बुग्गा जी आई.ए.एस. को भी मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में चल रहे सकरिया, कछौड़ और भगवानपुर के डी.ए.वी. मुख्यमन्त्री पब्लिक स्कूलज की सहायतार्थ से एक करोड़ से अधिक की धनराशि को अपनी प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की थी। हम सबने उनका स्वागत एवं धन्यवाद किया और इस सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। वह व्यक्ति बहुत सज्जन और डी.ए.वी. के लिए समर्पित दिखाई दिए। भविष्य में भी उन्होंने आर्थिक सहायता की विश्वास दिलाया।

सारांश कि इन पांच दिनों में हम दोनों ने श्री प्रशान्त जी के साथ लगभग (1000) एक हजार किलो मीटर से भी ज्यादा का सफर सड़क के माध्यम से किया और रेल द्वारा (1400) चौदह सौ किलो मीटर।

वस्तुतः छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने डी.ए.वी. की कार्य कुशलता, ईमानदारी और पारदर्शिता को आंकते हुए ही अपने राज्य के नए स्कूलों का विधिवत् और कुशलतापूर्वक संचालन करने का दायित्व डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति को सौंपा था। इस सब का श्रेय डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी की दूरदृष्टि और सकारात्मक नेतृत्व को ही जाता है जिससे बीहड़ स्थानों पर भी पहुंचकर ज्ञान का दीप जलाने में हम सक्षम हुए हैं। तभी तो 'जहाँ न पहुंचे रवि वहाँ पहुंचे डी.ए.वी.' हम गौरव से कह सकते हैं। डॉ. वी.सिंह, निदेशक पब्लिक स्कूल्स, डी.ए.वी. सी.एम.सी. एवं श्री प्रशान्त कुमार, सह क्षेत्रीय निदेशक भी पूरी तन्मयता से इस बृहद यज्ञ की सम्मन्नता में लगे हुए हैं। उन्हें भी साधुवाद।

- डी.ए.वी. सेठी कोषाध्यक्ष डी.ए.वी.सी.एम.सी.

श्री रामनाथ सहगल जी का 94वां जन्मदिवस आयोजित



आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में दिनांक 11 मार्च 2018 को श्री रामनाथ जी सहगल मन्त्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, उपप्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली, उपप्रधान आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, उपप्रधान आर्य प्रोदशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को 94वां जन्मदिवस बड़ी धूमधाम के साथ आयोजित किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्य एवम् डी.ए.वी. के प्रमुख अधिकारी एवम् कर्मचारी इस उत्सव पर उपस्थित थे। डी.ए.वी. के सचिव श्री अजय सूरी जी ने अपने वक्तव्य में सहगल जी की दीर्घ आयु की प्रार्थना करते हुए 100 वर्ष तक अथवा अधिक वर्षों तक जीने की कामना की और सहगल जी की दिनचर्या एवम् इस आयु में भी युवक हृदय की भावनाओं को संजोय हुए सहगल जी के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अरूण अब्रोल जी का अभिनन्दन

श्री अरूण अब्रोल जी का जन्म 9 सितम्बर 1950 को ग्राम कादियां, जिला-गुरदासपुर, पंजाब में हुआ। आपकी माता श्रीमती स्वर्ण लता अब्रोल एवम् पिता महात्मा जगदीश मित्र (अब्रोल) थे। आपके दादा जी के सहयोग से गांव कादियां में डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना हुई थी। अपने माता-पिता एवम् दादा से प्राप्त संस्कार के अनुसार आपने आर्य समाज के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दी और तदनुसार आप आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के कई वर्षों तक कोषाध्यक्ष और वर्तमान में मन्त्री के रूप में श्री अरूण अब्रोल जी सहपत्निक एवं पुत्र अभिषेक के साथ अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आर्य विद्या सभा मुम्बई द्वारा संचालित स्कूल कॉलेज के कार्यकारिण में आप सदस्य हैं। आर्य समाज मुम्बई (सबसे पुरानी आर्य समाज) ने आपको आर्य श्रेष्ठी सम्मान देकर अभिनन्दन किया। इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।





टंकारा समाचार

अप्रैल 2018

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

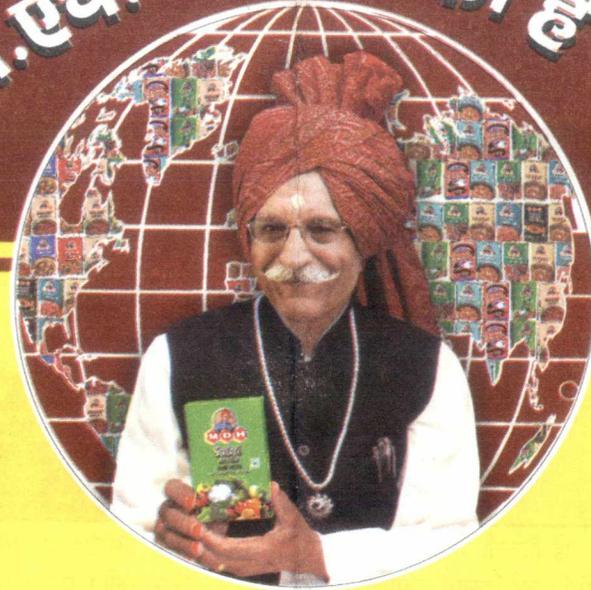
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-04-2018

R.N.I. No 68339/98

प्रकाशन तिथि: 23.03.2018

दुनियाँ ने है माना

एम.डी.एच. मसालों का है जमाना

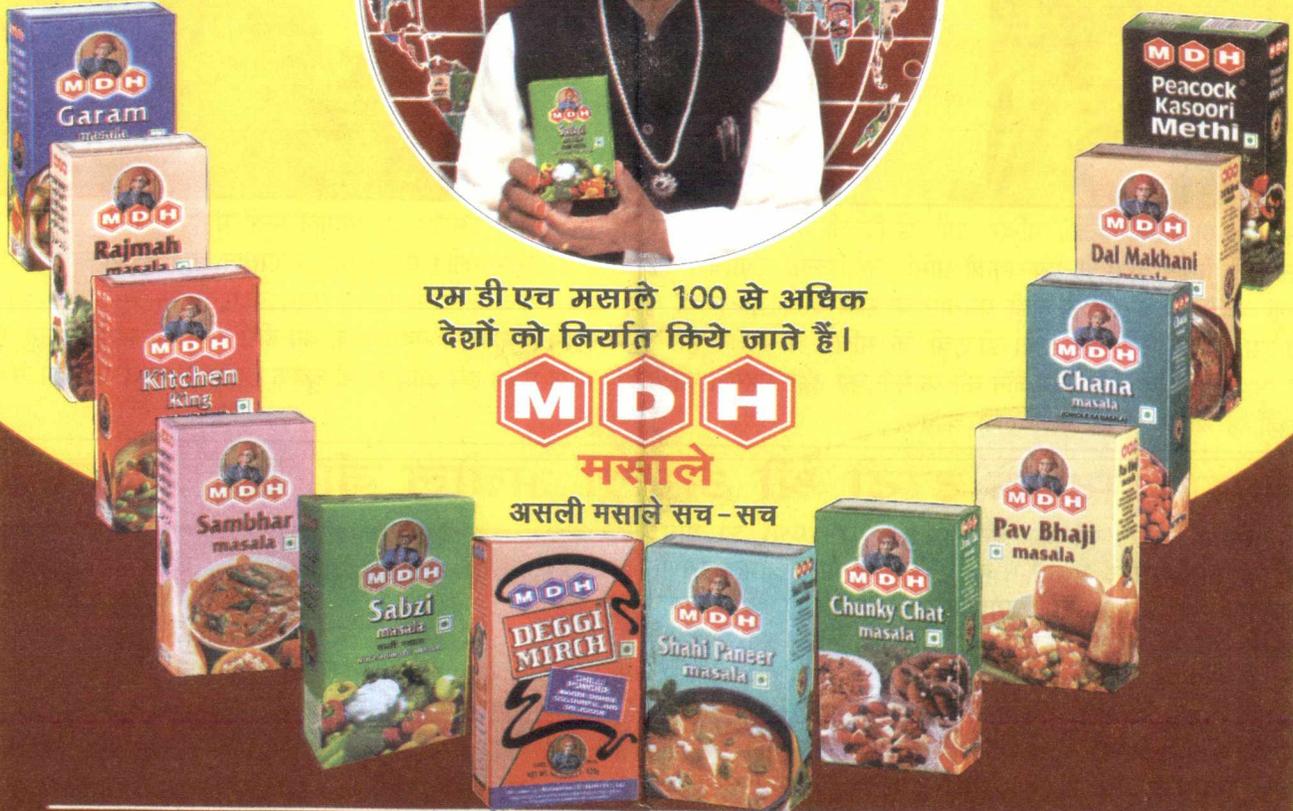


एम डी एच मसाले 100 से अधिक देशों को निर्यात किये जाते हैं।

MDH

मसाले

असली मसाले सच - सच



महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com



मुद्रक व प्रकाशक—रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित।

संपादक : अजय